प्राक्कथन

संसार में प्रत्येक प्राणी को यह जानना अति आवश्यक है कि मैं क्या हूँ, मेरी दुःखित सुखित अवस्था का क्या कारण है जिस वस्तु का आज संयोग है उसी का कल वियोग होता है इसका प्रधान कारण क्या है और किसे कहते हैं अर्थात् क्या वस्तु है पुण्य पाप के कितने भेद हैं धर्म के नियम कितने हैं अर्हन्त शास्त्रों के समझ जानकर उन नियमों का पालन करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है यह न्याय सर्वमान्य है मानो इसी लिए तीर्थंकर भगवान् महावीर प्रभुने सूत्रकृताङ्ग दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन की ११ वीं गाथा में कहा है—

जो जीवेवियाणाइ अजीवेवियाणइ ।
जीवाजीवे वियाणंतो सो हु नाहीइ संजमं ॥

अर्थात् जो जीवों और अजीव तत्त्वों को नहीं जानता है वह साधु धर्म या गृहस्थ धर्मादि का पालन नहीं कर सकता है। संसार के दुःखों से छूटने का उपाय ज्ञान होने पर का ज्ञान होने पर साधु या श्रावक के चारित्र का पालन करना जरूरी है। चारित्र का मूल सम्यक्त्व है। सम्यक् सम्यक्त्व होने के पश्चात् चारित्र रूपी में इच्छित ईश्वर गुणस्थान का पालन करने से सब कर्म कट जाते हैं और यह आत्मा शुद्ध सिद्ध निरञ्जन पद का अधिकारी हो जाता है। किन्तु के ज्ञान का

जानने के लिए इस अपूर्व ग्रंथ का मनन करना जरूरी है। पहले भी मैंने पैंतालीस बोल का थोकड़ा तदनन्तर छत्तीस द्वार का थोकड़ा ये ग्रंथ प्राचीन अर्वाचीन मुनिराजों ने छपवाए हैं। इनके पृथक् पृथक् होने के कारण व आधुनिक स्पष्ट हिन्दी भाषा में प्रचलित न होने के कारण विद्यार्थियों को बहुत असुविधा मालूम होता था। उस कठिनाई को ध्यान में रखकर इस ग्रंथ में पैंतालीस बोल का थोकड़ा तदनन्तर छत्तीस द्वार दण्डक का छत्तीस द्वार गुण स्थानों का वर्णन जैन धर्म के दस नियम आदि ऐसा विस्तार किया है कि जिससे छात्रों को व स्वाध्याय करने वालों को विशेष ज्ञान प्राप्त हो और बहुत कठिन विषय भी सामने न आए जिससे साधारण बुद्धि वालों का मन न उकताए और धर्म का मर्म समझ सकें। इस ग्रंथ को पूर्णतया शुद्ध न हो सकने के कारण बहुत सी त्रुटियाँ भी रही होंगी उन्हें पाठक स्वयं सुधार कर पढ़ेंगे।

आत्मार्थी इच्छुक

जैनमुनि पुष्पचन्द्र

समर्पण

अपने पूज्य पतिदेव

स्वर्गीय लाला नरातामल जी जैन

की

पुण्य स्मृति में सादर भेंट ।

कृपी देवी जैन

पच्चीस बोल का थोकड़ा

पच्चीस बोल का थोकड़ा

१ गति-चार

१ नरक गति २ तिर्यञ्च गति ३ मनुष्य गति ४ देव गति।

२ जाति-पाच

१ एकेन्द्रिय जाति २ द्वीन्द्रिय जाति ३ त्रीन्द्रिय जाति ४ चतुरिन्द्रिय जाति ५ पचेन्द्रिय जाति।

३ काय-छह

१ पृथिवीकाय २ अप्काय ३ तेजोकाय ४ वायुकाय ५ वनस्पति काय ६ और त्रसकाय।

४ इन्द्रिय-पाच

१ श्रुतेन्द्रिय २ चक्षुरिन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ रसेन्द्रिय ५ स्पर्शेन्द्रिय।

५ पर्याप्त-छह

१ आहार पर्याप्त २ शरीर पर्याप्त ३ इन्द्रिय पर्याप्त ४ श्वासोश्वास पर्याप्त ५ भाषा पर्याप्त ६ मन पर्याप्त।

६ प्राण-दश

१ श्रुतेन्द्रिय बलप्राण २ चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण ३ घ्राणेन्द्रियबलप्राण ४ रसेन्द्रिय बलप्राण ५ स्पर्शेन्द्रिय बल

यट्टि (अनिवर्त्ति) बादर गुणस्थान १० सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान ११ उपशान्तमोहनीय गुणस्थान १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान १३ सयोगी केवली गुणस्थान १४ अयोगी केवली गुणस्थान।

१२ पाच इन्द्रियों के विषय-तेईस

(श्रुतेन्द्रिय के विषय ३) १ जीव शब्द २ अजीव शब्द ३ मिश्र शब्द (चक्षुरिन्द्रिय के विषय ५) १ कृष्ण २ नील ३ पीत ४ रक्त ५ श्वेत (घ्राणेन्द्रिय के विषय २) १ सुगन्ध २ दुर्गन्ध (रसेन्द्रिय के विषय ५) १ कटुक २ कषाय ३ खट्टा ४ मृदु (मीठा) ५ तीक्ष्ण (स्पर्शेन्द्रिय के विषय ८) १ कर्कश २ सुकोमल ३ लघु ४ गुरु ५ उष्ण ६ शीत ७ रूक्ष ८ स्निग्ध।

१३ मिथ्यात्व के भेद-दश

१ जीव को अजीव कहे तो मिथ्यात्व २ अजीव को जीव कहे तो मिथ्यात्व ३ धर्म को अधर्म कहे तो मिथ्यात्व ४ अधर्म को धर्म कहे तो मिथ्यात्व ५ साधु को असाधु कहे तो मिथ्यात्व ६ असाधु को साधु कहे तो मिथ्यात्व

७ मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ८ संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ९ कर्म रहित को कर्म सहित कहे तो मिथ्यात्व १० कर्म सहित को कर्म रहित कहे तो मिथ्यात्व।

१४ तत्त्व—नौ

१ जीव तत्त्व २ अजीव तत्त्व ३ पुण्य तत्त्व ४ पाप तत्त्व ५ आश्रव तत्त्व ६ संवर तत्त्व ७ निर्जरा तत्त्व ८ बन्ध तत्त्व ९ मोक्ष तत्त्व।

लघु नव तत्त्व के ११५ भेद

प्रथम जीव तत्त्व के १४ भेद—(एकेन्द्रिय के ४ भेद) १ सूक्ष्म २ बादर ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त (द्वीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (त्रीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (चतुरिन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (पञ्चेन्द्रिय के ४ भेद) १ सन्नि पञ्चेन्द्रिय २ असन्नि (असन्नि) पञ्चेन्द्रिय ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त।

दूसरे अजीव तत्त्व के १४ भेद—(धर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (अधर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (आकाशास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (काल का एक ही भेद) एक काल द्रव्य एवं १० (पुद्गल द्रव्य के ४ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश ४ परमाणु पुद्गल।

तीसरे पुण्य तत्त्व के ९ भेद—१ अन्न पुण्य २ (पान)

पाणी पुण्य ३ लयण पुण्य ४ शयन पुण्य ५ वस्त्र पुण्य ६ मन पुण्य ७ वचन पुण्य ८ काय पुण्य ९ नमस्कार पुण्य (नम्रता)।

चतुर्थ पाप तत्त्व के १८ भेद–१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह (झगड़ा) १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मृषा १८ मिथ्या दर्शन शल्य।

पाचवें आश्रव तत्त्व के २० भेद–१ मिथ्यात्वाश्रव २ अव्रताश्रव ३ प्रमादाश्रव ४ कषायाश्रव ५ योगाश्रव ६ प्राणातिपाताश्रव ७ मृषावादाश्रव ८ अदत्तादानाश्रव ९ मैथुनाश्रव १० परिग्रहाश्रव ११ श्रुतेन्द्रियाश्रव १२ चक्षुरिन्द्रियाश्रव १३ घ्राणेन्द्रियाश्रव १४ रसनेन्द्रियाश्रव १५ स्पर्शेन्द्रियाश्रव (यह पांच इन्द्रिय वश न करने से आश्रव होते हैं।) १६ मनोयोगाश्रव १७ वचनयोगाश्रव १८ काययोगाश्रव १९ भाण्डोपकरण वस्त्र पात्र अयत्ना से ग्रहण करे, अयत्ना से रक्खे तो आश्रव २० सूची कुशाग्रमात्र भी पदार्थ अयत्ना से लेवे तथा देवे तो आश्रव।

छठे संवर तत्त्व के २० भेद–१ सम्यक्त्व संवर २ व्रत संवर ३ अप्रमाद संवर ४ अकषाय संवर ५ अयोग संवर ६ प्राणातिपात विरमण संवर ७ मृषावाद विरमण संवर ८ अदत्तादान विरमण संवर ९ मैथुन विर-

१७-१९ तीनों विकलेन्द्रियों के ३ दण्डक २० पञ्चेन्द्रिय तिर्यचों का एक दण्डक २१ मनुष्य का एक दण्डक २२ व्यन्तर देवों का एक दण्डक २३ ज्योतिषी देवों का एक दण्डक २४ वैमानिक देवों का एक दण्डक।

१७ लेश्याएं-छः

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८ दृष्टि-तीन

१ सम्यग् दृष्टि २ मिथ्या दृष्टि ३ मिश्र दृष्टि।

१९ ध्यान-चार

१ आर्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

२० द्रव्य—छः

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल द्रव्य।

षड् द्रव्यों के तीस भेद

(धर्मास्तिकाय के पांच भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से गति स्पर्श चलन गुण सहाय।

(अधर्मास्तिकाय के ५ भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से स्थिर गुण सहाय (स्थिति लक्षण)।

१७–१९ तीनों विकलेन्द्रियों के ३ दण्डक २० पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों का एक दण्डक २१ मनुष्य का एक दण्डक २२ व्यन्तर देवों का एक दण्डक २३ ज्योतिषी देवों का एक दण्डक २४ वैमानिक देवों का एक दण्डक।

१७ लेश्या-छः

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८ दृष्टि-तीन

१ सम्यग् दृष्टि २ मिथ्या दृष्टि ३ मिश्र दृष्टि।

१९ ध्यान-चार

१ आर्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

२० द्रव्य—छः

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल द्रव्य।

षट् द्रव्यों के तीस भेद

(धर्मास्तिकाय के पांच भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से गति लक्षण, चलन गुण सहाय।

(अधर्मास्तिकाय के ५ भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से स्थिर गुण सहाय (स्थिति लक्षण)।

कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा ५ कराऊ नहीं वयसा ६ कराऊ नहीं कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा ८ अनुमोदू नहीं वयसा ९ अनुमोदू नहीं कायसा।

२—अङ्क एक १२ (बारह) का-भाङ्ग ९। १ करण २ योग से कहना।

१ करू नहीं मनसा वयसा २ करू नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं वयसा कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा वयसा ५ कराऊ नहीं मनसा कायसा ६ कराऊ नहीं वयसा कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ८ अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ९ अनुमोदू नहीं वयसा कायसा।

३—अङ्क एक १३ का-भाङ्ग ३। १ करण ३ योग से कहना।

१ करू नहीं मनसा वयसा कायसा २ कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा ३ अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा।

४—अङ्क एक २१ का-भाङ्ग ९। दो करण एक योग से कहना। जैसे कि—

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा २ करू नहीं कराऊ नहीं वयसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं कायसा ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ७ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ९ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं कायसा।

५—अङ्क एक २२ का—भाङ्गे ९। दो करण दो योग से कहना चाहिये।

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा वयसा २ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं वयसा कायसा ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा ७ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा। ९ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा।

६—अङ्क एक २३ का—भाङ्गे ३। २ करण ३ योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा २ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा ३ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा।

७—अङ्क एक ३१ का—भाङ्गे ३। तीन करण एक योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा। २ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं कायसा।

८—अङ्क एक ३२ का—भाङ्गे ३। तीन करण दो योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा। २ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा। ३ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा।

९—अङ्क पर ३३ का—भाङ्ग १। तीन करण तीन योग से करना।

१ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयमा कायसा।

२१ चारित्र पांच

१ सामायिक चारित्र छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

नव तत्त्व वर्णन

अथ नवतत्त्व वर्णन

गाथा

जीवाजीव पुण्ण पावासव संवर निज्जरणा ।
बंध मोक्खा अ तहा नवतत्ताहुन नायव्वा ॥१॥
धम्मा धम्मागासा तिय तिय भेया तहेव अद्धाय ।
खंद देस पएसा परमाणु अजीव चउदसहा ॥२॥
धम्मा धम्मागासा तिय तिय भेया तहेव अद्धाय ।
एए चउअमुत्ति दव्व खित्त काल भाव गुणा ॥३॥
इन्दिय कसाय अव्वय जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कम्मा ।
किरियाउ पणवीसं इमाओ ताओ अनुक्कमसो ॥४॥
समइ गुत्ति परिसह जइ धम्मो भावना चरित्ताणि ।
पनत्ति दुबाय दसबार पंचभएहिं सगावन्ना ॥५॥
आहा कम्म उद्देसिय पूइकम्मय मिस्सजाये ।
ठवणा पाहुडियाए पाओअरकिय पामिच्च ॥६॥
परियट्टिय अभिहड उब्भिन्न मालोहडेय अच्छिज्जे ।
अनिसिट्ठे अज्झोयरे य सोलस्स पिंडग्गम दोस्सा ॥७॥
धाइ दूइ निमित्त अजीव वणिमगे तिगिच्छाये कोह माणे मायालोभे ये हवन्ति दस दोसा । पुव्विपच्छा संथवानि ज्जामन चुण्ण जोग उपायनाय दोसा सोलसमे मूलकम्म ।

गणिय मणियम्य निरिग्गापिदिय मारिग दाय। गमिमम। पणारगाय रिग उड्डिय पमग दोगा दम हरति।

रगमगग मुगायरिया रिनी मरीनग रम चाउ। काय ।हरमा गरीश्राण नजभा तरा होर।

पार्गरि। रिगया रयारश नहर मज्झाओभाग ।रगमगाोय अभिनग तरा हाइ।

परग पगारया तुला ठिय मागनिहारिण अणुभागा मागइ पग्गारमराइ।

मनाग पगागगारगरपमाग श गिन कुमगाप। मागाय अलगभागा भागअण्ण बहु भर।

नगाम परिगिलिय नरग भग मणी अरगगाय गगद गमगमगमगागहार कार गगमा नागग गमगु।

नवतत्त्व नाम

१ जीवतत्त्व २ अजीवतत्त्व ३ पुण्यतत्त्व ४ पापतत्त्व ५ आस्रवतत्त्व ६ संवरतत्त्व ७ निर्जरातत्त्व ८ बंधतत्त्व ९ मोक्षतत्त्व।

इस प्रकार भगवान् ने नवतत्त्व प्रतिपादन किए हैं जिनमें—जीव अजीव पुण्यतत्त्व, यह तीन ज्ञेय (जानने योग्य) हैं, पाप आश्रव बंध यह तीन हेय त्यागने योग्य हैं। संवर, निर्जरा मोक्ष यह तीन उपादेय (ग्रहण करने योग्य) हैं।

नवतत्त्व के—भेद [illegible] अब इनको यह लिखते हैं।

जैसे—पुण्य पाप आस्रव बन्ध यह चार रूपी हैं। जीव संवर, निर्जरा मोक्ष यह चार अरूपी हैं। अजीव रूपी अरूपी दोनों प्रकार का होता है।

१ जीवतत्त्व

जीव किसे कहते हैं? पुण्य पाप का कर्ता सुख दुःख का भोक्ता चेतना लक्षण सहित प्राणों का धारक आदि इत्यादि लक्षणों वाले को जीव कहते हैं।

जीव का जघन्य एक भेद चेतना लक्षण मध्यम १४ (चौदह) भेद उत्कृष्ट ५६३ भेद हैं।

मध्यम चौदह भेद इस प्रकार हैं—

जीव का १ भेद—चेतना लक्षण।

जीव के २ भेद—१ त्रस २ स्थावर।

जीव के ३ भेद—१ स्त्री वेद २ पुरुष वेद ३ नपुंसक वेद।

जीव के ४ भेद—१ नारकी २ तिर्यञ्च ३ मनुष्य ४ देवता।

जीव के ५ भेद—पांचों जातियां—१ एकेन्द्रिय २ द्वीन्द्रिय ३ त्रीन्द्रिय ४ चतुरिन्द्रिय ५ पंचेन्द्रिय।

जीव के ६ भेद—१ पृथ्वी २ अप् ३ तेउ ४ वायु ५ वनस्पति, ६ त्रसकाय।

जीव के ७ भेद—१ नारकीय २ देव ३ देवी ४ मनुष्य ५ मानुषी ६ तिर्यग् ७ तिर्यञ्ची।

जीव के ८ भेद—चार गति का, पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के ९ भेद—पाँच स्थावर चार त्रस।

जीव के १० भेद पाँच जाति का पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के ११ भेद—चार सूक्ष्म पृथ्वीकाय से लेकर वनस्पति पर्यन्त। छः बादर पृथ्वीकाय से लेकर त्रस तक।

जीव के १२ भेद—छः काया के जीव पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के १३ भेद—१ पृथ्वीकाय २ अप्काय ३ तेउकाय ४ वनस्पतिकाय के दो भेद हैं ५ प्रत्येक ६ साधारण ७ द्वीन्द्रिय ८ त्रीन्द्रिय ९ चतुरिन्द्रिय। पंचेन्द्रिय के चार भेद। १० नारकी ११ तिर्यञ्च १२ मनुष्य १३ देवता।

जीव के १४ भेद—एकेन्द्रिय के ४ भेद—सूक्ष्म, बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त, अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय के २ भेद—पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय के दो भेद पर्याप्त अपर्याप्त। पंचेन्द्रिय के ४ भेद—संज्ञी, असंज्ञी का पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के उत्कृष्ट ५६३ भेद

नरिय तिरियनरामरा चउदस अडयाल तिन्निसयतिन्नि अडनउ सयमय पणसय सयायलमट्ठा।

नरक के १४ भेद

१ घम्मा २ वंशा ३ शीला, ४ अञ्जना, ५ रिट्ठा, ६ मघा ७ माघवई इन सातों का पर्याप्त और सातों का अपर्याप्त एवं १४ चौदह।

सात नारकों के नाम

१ रत्न प्रभा २ शर्कर प्रभा ३ बालु प्रभा ४ पंक प्रभा ५ धूम प्रभा ६ तम प्रभा ७ तमतमा प्रभा एवं १४।

तिर्यञ्च के ४८ भेद

एकेन्द्रिय के २२

पृथ्वीकाय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

अप्काय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तेउकाय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वायुकाय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वनस्पति काय के ६ भेद

सूक्ष्म प्रत्येक, साधारण। इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त। एवं एकेन्द्रिय के कुल २२ भेद हुए।

विकलेन्द्रिय के ६ भेद

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय के २० भेद

जलचर १ स्थलचर २ खेचर ३ उरपुर ४ भुजपुर ५ यह पांच सन्नी और पांच असन्नी। इन दस का पर्याप्त और अपर्याप्त एवं २०। सब मिलकर तिर्यञ्च के ४८ भेद हुए।

जो जल में चलें उन्हें जलचर कहते हैं। जैसे—मच्छ, कच्छ, मगर, गोहा, सुसुमारादि, इनका कुल १२॥ लाख करोड़ का है।

जो पृथ्वी पर चलें उन्हें स्थलचर कहते हैं। जैसे—एक खुरा—गधा, घोड़ा, खच्चर आदि। दो खुरा—गाय, भैंस, बकरी आदि। गंडीपया—हाथी, गैंडा आदि। सनीपया—शेर, बिल्ली, कुत्ता आदि। इनका कुल १० करोड़ का है।

जो आकाश में उड़ने वाले जीव हैं उन्हें खेचर कहते हैं। जैसे—चर्म पक्षी—चमड़े के पंख वाले। चामचिड़ी, (चमगादड़) आदि। रोम पक्षी—जैसे, तोता, चिड़ी, कबूतर आदि। समुद्ग पक्षी—जिनके पंख डब्बे के आकार के हैं, यह अढ़ाई द्वीप के बाहर होते हैं। वितत पक्षी—जिनके पंख कमरस्थान के आकार के होते हैं। यह भी अढ़ाई द्वीप के बाहर होते हैं। इनका कुल १२ लाख करोड़ का होता है।

जो छाती के बल से चलें उनको उरपुर कहते हैं। जैसे—अहि, अजगर, महोरग, आसालिया आदि। इनका कुल १० करोड़ का होता है।

जो भुजाओं के बल से चलें उनको भुजपुर कहते हैं। जैसे—नेवला, चूहा, गिलहरी आदि। इनका कुल ९ करोड़ का होता है।

इस प्रकार तिर्यञ्च के ४८ भेद हुए।

३०३ तीन सौ तीन प्रकार के मनुष्य

१५ (पन्द्रह) कर्मभूमि के मनुष्य ३० (तीस) अकर्मभूमि के मनुष्य, ५६ (छप्पन) अन्तरद्वीपों के मनुष्य ये सब एक सौ एक हुए। इन एक सौ एक का पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो सौ दो हुए। एक सौ एक प्रकार के सम्मूर्च्छिम मनुष्य=अपर्याप्त। कुल तीन सौ तीन हुए।

१ कर्मभूमि के मनुष्य—कर्मभूमि किसे कहते हैं? जहां असि–खड्गविधि, मसी–लखनविधि, कृषि–खेती कर्म, राजनीति–साधु साध्वी धर्म व्यवहार ७२ कला मनुष्यों की, ६४ कला स्त्रियों की १०० एक सौ प्रकार का शिल्पकर्म। जहां पर यह सब कार्य विद्यमान हों उसे कर्मभूमि कहते हैं। ५ भरत ५ इरावत ५ महाविदेह ये १५ कर्मभूमि मनुष्यों के क्षेत्र हैं। एक लाख योजन का जम्बूद्वीप है। इसमें एक भरत एक इरावत, एक महाविदेह ये तीन क्षेत्र हैं।

जम्बूद्वीप के चारों ओर दो लाख योजन का लवण समुद्र है। लवण समुद्र के चारों ओर ४ लाख योजन का धातकी खण्ड है। धातकी खण्ड में २ भरत २ इरावत २ महाविदेह यह छः क्षेत्र हैं। धातकी खण्ड के चारों ओर आठ लाख योजन का कालोदधि समुद्र है। कालोदधि के चारों ओर १६ लाख योजन का पुष्करद्वीप है। इसके मध्य चारों ओर मानुषोत्तर पर्वत है, उसके आभ्यन्तर अर्ध

४ दीपांग=जिनसे रोशनी निकलती है।

५ ज्योतिरांग=सूर्यवत् तेज कान्ति वाले।

६ चित्रांग=चित्राम सहित फूलों की माला-गुच्छ हैं जिनमें।

७ भोजनांग=मनोरम भोजन सामग्री के दाता।

८ वस्त्रांग=जिनमें अनेक प्रकार के वस्त्रों के देने वाले गुण हैं।

९ भूषणांग=जिनमें अनेक प्रकार के आभूषणों के देने जैसे गुण हैं।

१० गृहांग=शोभन घरों के आकार वाले मनोरम शयनादि विमान के दाता।

४६ अन्तरद्वीप मनुष्य कहाँ है?

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला चुल्लहिमवान पर्वत है। इसका स्वर्णमयी १०० योजन का उँचा योजन का भूमि में १०५२ योजन १२ कला का चौड़ा योजन का लम्बा इसकी बाहु ५३५० योजन १५ कला की एक एक है इसकी जीवा २४९३२ योजन पौन कला की है। इसकी धनुष पृष्ठिका २५२३० योजन ४ कला की है। पर्वत के पूर्व पश्चिम में ४ दाढ़ा हैं। एक एक चौरासी सौ योजन से कुछ अधिक लवण समुद्र में गई हैं। एक एक दाढ़ पर सात सात अन्तरद्वीप (कुटक) हैं। सो इस प्रकार हैं—

मेहमुहे २० विद्युमुह २३ विद्युद्दन्त २४ घणदन्त २५ लठदन्ते २६ गुढदन्ते २७ सुधदन्त २८ ।

अट्ठाइस चुल्लहमवन्त पर्वत व अट्ठाइस सिखरी पर्वत पर ।

इति ५६ अन्तरद्वीप मनुष्य वर्णन ।

१५ कर्मभूमि ३० अकर्मभूमि ५६ अन्तरद्वीप यह १०१ हुए । इनका पर्याप्त और अपर्याप्त २०२ हुए । इन्ही के १०१ क्षेत्रों के सम्मूर्छिम मनुष्य अपर्याप्त सब मिलकर मनुष्यों के ३०३ भेद हुए ।

सम्मूर्छिम मनुष्य १४ स्थानों में उत्पन्न होते हैं । १४ स्थानों के नाम–उच्चारसु वा १ पासवणसु वा २ खेलसु वा ३ सिंघाणसु वा ४ वंतसु वा ५ पित्तसु वा ६ पूयसु वा ७ सोणियसु वा ८ सुक्केसु वा ९ सुक्कपुग्गलपरिसाडेसु वा १० विगय जीवकलेवरसु वा ११ इत्थीपुरिससंजोगेसु वा १२ नगरनिद्धमणेसु वा १३ सव्वअसुचाथानेसु वा १४ ।

१९८ प्रकार के देवता

१० प्रकार के भवनपति देव–असुर कुमार १ नाग कुमार २ सुवर्ण कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिशा कुमार ८ पवन कुमार ९ स्थणित कुमार १० ।

१५ प्रकार के परमाधर्मी देव–अंबे १ अंबरसे २ सामे ३ सबले ४ रुद्दे ५ विरुद्दे ६ काले ७ महाकाले ८ असीपत्ते

९ घनुपत्ते १० कुभिये ११ वाउग १२ वयारणे १३ सागरे १४ महाघोसे १५।

१६ प्रकार के वाणव्यन्तर देव—पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किंनर ५ किंपुरुष ६ महारग ७ गन्धर्व ८ आणपन्न ९ पाणपन्ने १० इस्मीवाय ११ भूयवाय १२ कन्दीय १३ महाकन्दिय १४ कुहण्ड १५ पयगदेवा १६।

१० प्रकार के तिर्यग्जृम्भक देव—आण जृम्भका १ पाण जृम्भका २ लयण जृम्भका ३ सयण जृम्भका ४ वत्थ जृम्भका ५ पुष्पजृम्भका ६ पुष्प फल जृम्भका ७ फल जृम्भका ८ बीज जृम्भका ९ आयति जृम्भका १०।

१० प्रकार के ज्योतिषी देव—चन्द्रमा १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५। यह ५ चर ५ अचर कुल १० हुए। यह अढाई द्वीप में चलते हैं और बाहर अचल होते हैं।

३ प्रकार के किल्बिषी देव—तीन पल्य वाले १ तीन सागर वाले २ तेरह सागर वाले ३।

तीन पल्य वाले ज्योतिषी देवों से ऊपर हैं परन्तु पहले दूसरे देवलोक से नीचे। तीन सागर वाले पहले दूसरे देव लोक से ऊपर किन्तु तीसरे चौथे देवलोक से नीचे हैं।

तेरह सागर वाले—पाँचवें देवलोक से ऊपर और छठे देवलोक से नीचे।

९ प्रकार के लोकान्तिक देव—सर्वे १ सर्वे २ वह्नि ३

धरणी ४ गन्धनोया ५ तोषिया ६ अव्याबाह ७ अग्गिचा ८ रिट्ठाय चेव ९।

१२ प्रकार के कल्पवासी देव—सुधर्मा देवलोक १ ईशान देवलोक २ सनत्कुमार देवलोक ३ माहेन्द्र देवलोक ४ ब्रह्म देवलोक ५ लान्तक देवलोक ६ महाशुक्र देवलोक ७ सहस्रार देवलोक ८ आणत देवलोक ९ प्राणत देवलोक १० आरणक देवलोक ११ अच्युत देवलोक १२।

नव नवग्रैवेयक देवलोक—भद्र १ सुभद्र २ सुजाय ३ सुमणसे ४ सुदर्शन ५ प्रियदर्शन ६ अमोह ७ सुप्रतिबुद्ध ८ यशोधर ९।

पाच अनुत्तर विमानों के नाम—विजय १ वैजयन्त २ जयन्त ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५। यह सब ९९ प्रकार के देवता हुए। इन ९९ का पर्याप्त और अपर्याप्त सब १९८ हुए।

इति जीवतत्त्व समाप्त।

२ अजीवतत्त्व

अजीव पुण्य पाप का कर्ता नहीं सुख दुःख का भोक्ता नहीं शुभाशुभ कर्म कर्ता नहीं भोक्ता नहीं, अचेतना लक्षण, योगप्राण रहित, जड़ लक्षण सहित।

अजीव तत्त्व के जघन्य १४ भेद हैं जो कि पचीस बोल के थोकड़े में आ चुके हैं।

उत्कृष्ट ५६० भेद जिसमें ३० अरूपी और ५३० रूपी हैं। ३० अरूपी जैसे—धर्मास्तिकाय के ३ भेद। स्कन्ध १

काले का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गंध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २ ।

नीले का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें साम। २ गंध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं ।

लाल का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गंध ५ रस ८ स्पर्श संस्थान एवं ०।

पीले का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गंध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं ।

सफेद का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गंध रस ८ स्पर्श संस्थान एवं ।

सब मिलकर २०×५=१०० भंग वर्णों के हुए।

दो गंध

सुगंध का करिये भाजन—दुर्गन्ध रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २३। ५ वर्ण ५ रस ८ स्पर्श संस्थान एवं

दुर्गंध का करिये भाजन—सुगंध रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २३। ५ वर्ण ५ रस ८ स्पर्श संस्थान एवं ५ सब मिलकर ४६ हुए।

पांच रस

कडुवा, कषायला, खट्टा, मीठा, तीखा।

कडुवे का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। ५ वर्ण २ गंध ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २०।

कषायले का करिये भाजन—चार रंगिय प्रतिपक्षी बोल

मन का वर्णित आसन—ग्हा रसिय प्रतिपक्षी। बोल पाव २१। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस F स्पर्श ० संस्थान एव २३।

ठण्ड का वर्णित आसन—नशा रसिय प्रतिपक्षी। बोल पावे २१। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान एव ।

क्रम का वर्णित आसन—चिवना रसिय निपक्षी। बोल पाव २८। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श संस्थान एव २३।

चिकन का वर्णित आसन—रूखा रसिय प्रतिपक्षी। बोल पाव २८। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श संस्थान एव ।

एव सब मिलकर २३ X ० एक सौ चौरासी भेद ८ स्पर्शों के हुए।

५ पाच संस्थान

१ परिमण्डल संस्थान २ वृत्त संस्थान ३ त्र्यस्र संस्थान ४ चतुरस्र संस्थान ५ आयत संस्थान

परिमण्डल का वर्णित आसन चार रसिय प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एव २०।

वृत्त संस्थान का वर्णित आसन—चार रसिय प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एव २०।

त्र्यस्र संस्थान का वर्णित आसन—चार रसिय प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एव २०।

चतुरस्र संस्थान का वर्णित आसन—चार रसिय प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एव २०

वेदनीय कर्म की १ प्रकृति—सातावेदनीय।

आयु कर्म की ३ प्रकृति—१ देवता की आयु २ मनुष्य की आयु ३ संज्ञीपंचेन्द्रिय तिर्यञ्च की आयु युगलियों की अपेक्षा।

गोत्रकर्म की एक प्रकृति—उच्च गोत्र।

नाम कर्म की ३७ प्रकृति—

गति दो—१ मनुष्य गति २ देवगति।

जाति एक—१ संज्ञी पंचेन्द्रिय।

शरीर पांच—१ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तैजस शरीर ५ कार्मण शरीर।

तीन अङ्गोपाङ्ग—१ औदारिक का अङ्गोपाग २ वैक्रिय का अगोपाग ३ आहारिक का अगोपाग।

संघयण एक—वज्र ऋषभ नाराच संघयण।

संस्थान एक—सम चौरस संस्थान।

शुभ चार—१ शुभ वर्ण २ शुभ गन्ध ३ शुभ रस ४ शुभ स्पर्श।

अनापूर्वी दो—१ मनुष्य की अनापूर्वी, २ देवता की अनापूर्वी।

चाल एक—१ शुभ चाल।

प्रत्येक नाम की ७ प्रकृति—१ पराघात नाम २ उच्छ्वास नाम ३ आताप नाम ४ उद्योत नाम ५ अगुरु लघुनाम ६ निर्माणनाम ७ तीर्थंकर नाम।

त्रस नाम की १० प्रकृति

१ त्रस नाम २ बादर नाम ३ प्रत्येक नाम ४ पर्याप्त नाम ५ स्थिर नाम ६ शुभ नाम ७ सौभाग्य नाम ८ सुस्वर नाम ९ आदेय नाम १० यशाकीर्ति नाम।

इति पुण्यतत्त्व समाप्त।

४ पापतत्त्व

पापतत्त्व किसे कहते हैं ? पाप बांधना सुलभ, भोगना कठिन। पाप प्राणी को दुःख देता है आत्मा को भारी करता है अशुभ गतियों में ले जाता है अशुभ कर्मों के बांधने में सहायक होता है इत्यादि रोग शोक कष्ट देने वाले को पाप तत्त्व कहते हैं।

पाप १८ प्रकार से बांधा जाता है

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ मायामृषा १८ मिथ्यादर्शन शल्य।

पाप ८२ प्रकार से भोगा जाता है

आठ कर्मों के उदय

१ ज्ञानावरणीय कर्म की ५ प्रकृति—१ मतिज्ञानावरणीय २ श्रुतज्ञानावरणीय ३ अवधिज्ञानावरणीय ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय ५ केवलज्ञानावरणीय।

२ दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृति—१ चक्षुदर्शनावरणीय २

२ अचक्षुदर्शनावरणीय ३ अवधिदर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानर्धि।

३ वेदनीय कर्म की दो प्रकृति—असातावेदनीय।

४ मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति—जिसमें १६ कषाय नव नोकषाय।

१६ कषाय

अनन्तानुबन्धी का चौक—अनन्तानुबन्धी का क्रोध जैसे पत्थर की रेखा। मान जैसे वज्र का स्तम्भ। माया जैसे बाँस की जड़ का बल। लोभ जैसे क्रिमिच मजीठ का रंग। इन चारों की स्थिति आयु पर्यन्त की घात करे सम्यक्त्व की गति नरक की।

अप्रत्याख्यानी का चौक—अप्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे सूखे तालाब (तलाव) की रेखा, मान जैसे हाड़ का स्तम्भ माया जैसे मेंढे के सींगों का बल लोभ जैसे नगर की मोरी के कीचड़ का रंग इन चारों की स्थिति एक वर्ष की, घात करे देशव्रत की (श्रावक व्रत की) गृहस्थ व्रत की गति तिर्यञ्च की।

प्रत्याख्यानी का चौक—प्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे गाड़ी के पहिये की रेखा (लकीर) मान जैसे काष्ठ का स्तम्भ, माया जैसे चलते बैल के पेशाब का बल, लोभ जैसे गाड़ी के खंजन का रंग। इन चारों की स्थिति चार मास की, घात करे

साधुव्रत की (सब व्रत की) गति मनुष्य की ।

संज्वलन का चौक—संज्वलन का क्रोध जैसे पानी की रेखा (लकीर) मान जैसे तृण का स्तम्भ, माया जैसे ऊ के धागे का बट लोभ जैसे हल्दी के पत्ते का रंग । स्थि क्रोध की २ मास की मान की १ मास की, माया की १ दिन की । लोभ का अन्तमहूर्त की घात करे वीतरागपद की गति देवलोक की ।

नव नोकषाय—१ हास्य २ रति ३ अरति ४ भय ५ शोक ६ दुगंछा ७ स्त्रीवेद ८ पुरुषवेद ९ नपुंसकवेद ९ ।

मोहनीय कर्म की एक प्रकृति—एक मिथ्यात्व मोहनीय इस प्रकार कुल २८ हुई ।

आयु कर्म की एक प्रकृति—नरक की आयु ।

६ नाम कर्म की ३४ प्रकृति ।

गति दो—१ नरक गति २ तिर्यञ्च गति ।

जाति चार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रि

संहनन पाँच—ऋषभ नाराच १ नाराच २ अर्द्धनाराच कीलिका ४ सेवार्त्त संहनन ५ ।

संस्थान पाँच—१ न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान २ सा संस्थान ३ वामन संस्थान ४ कुब्ज संस्थान ५ हुण्डक संस्थान

अशुभ चार—१ अशुभ वर्ण २ अशुभ गन्ध ३ अशु रस ४ अशुभ स्पर्श ।

अनापूर्वी नो–१ नरक की अनापूर्वी २ तिर्यंच की अनापूर्वी ।

घात एक–अशुभ चाल ।

घात एक–अपघात नाम ।

स्थावर नाम की १० प्रकृति–१ स्थावर नाम २ सूक्ष्म नाम ३ अपर्याप्त नाम ४ साधारण नाम ५ अस्थिर नाम ६ अशुभ नाम ७ दुर्भाग्य नाम ८ दुस्वर नाम ९ अनादेय नाम १० अयशःकीर्ति नाम ।

गोत्र कर्म की एक प्रकृति–नीच गोत्र ।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति–१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय ४ उपभोगान्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय । एवं ८२ ।

इति पापतत्त्व समाप्त ।

५ आश्रव तत्त्व

आश्रवतत्त्व किसे कहते हैं ? जीव रूपी तालाब में आश्रवरूपी नाला से पाप रूपी पानी आवे जिसमें आत्मा मलिन और भारी होकर संसार में जन्म, मरण जरा रोग, शोक आधिव्याधि अशुभ कर्म फल भोगता फिरे उसको आश्रव तत्त्व कहते हैं ।

आश्रवतत्त्व के जघन्य बीस भेद

१ मिथ्यात्व आश्रव २ अव्रत आश्रव ३ प्रमाद आश्रव

९ अप्रत्याख्याणिया–प्रत पचखाण न करने से, अव्रत से।

१० मिच्छादंसन वत्तिया–जिन वचनों पर श्रद्धा न करके विपरीत प्ररूपणा करने से।

११ दिट्ठिया–कौतुक–तमाशा मेला आदि अधार्मिक उत्सवों में राग करने से।

१२ पुट्ठिया–रागभाव से स्त्री, पुरुष पशु वस्त्रादि का स्पर्श करने से।

१३ पाडुच्चिया–जीव, अजीव पर द्वेष राग, द्वेष, उभय निमित्त से।

१४ सामंतोवणिवाइया–अपने या अन्य के द्विपद चौपद वस्तुओं की राग से प्रशंसा करने से।

१५ नेसत्थिया–लकड़ी, कंकर पत्थर आदि पुद्गल को अयत्न से इधर उधर फैंकने से।

१६ साहत्थिया–अपने हाथ से किसी को सताना।

१७ आणवणिया–पापकारी आज्ञा देना।

१८ विदारणीया–जीव अजीव को विदारण करने से।

१९ अणाभोगवत्तिया–अज्ञानपन शून्य उपयोग से लगे।

२० अणवकंखवत्तिया–मिथ्या अन्य धर्म की वाछा करने से

२१ अनुपयोगी–विना उपयोग कार्य करने से।

२२ समुदाणकिरिया–अशुभ–पाप कार्य में मनुष्यों के साथ कर्म बाधने से।

२३ प्रायोगिकी क्रिया–योग से।

२४ समुदानिकी क्रिया–इकट्ठी करने से।

२५ ईर्यापथिकी क्रिया शुभ योगों से लगने से। केवल ज्ञानी को लगती है पहले समय लगती है दूसरे समय वेदते हैं। तीसरे समय निर्जरा देते हैं।

१७ प्रकार का असंयम

जैसे— इन्द्रिय ५ आस्रव ५ कषाय ४ अशुभ योग ३ एवं १७।

इति आस्रवतत्त्व समाप्त।

६ संवर तत्त्व

संवर तत्त्व किसे कहते हैं? आत्मा रूपी तालाब में आस्रव रूपी नालों के द्वारा पापरूपी पानी आते हुए को संवर रूपी पट्टी से रोका जाय उसको संवर तत्त्व कहते हैं।

संवरतत्त्व के जघन्य २० भेद

१ सम्यक्त्व सम्वर २ व्रतप्रत्याख्यान सम्वर ३ अप्रमाद सम्वर ४ अकषाय सम्वर ५ शुभयोग सम्वर ६ प्राणातिपात–जीव की हिंसा न करे तो सम्वर ७ मृषावाद–झूठ न बोले तो सम्वर ८ अदत्तादान–चोरी न करे तो सम्वर ९ मैथुन न सेवे तो सम्वर १० परिग्रह न रखे तो सम्वर ११ श्रोत्रेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १२ चक्षु इन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १३ घ्राणेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १४ रसेन्द्रिय वश में करे तो

मम्वर १५ स्पर्श इन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १६ मन वश में करे तो सम्वर १७ वचन वश में करे तो सम्वर १८ काय वश में करे तो सम्वर १९ वस्त्रादि यतना से लेवे देवे रखे तो सम्वर २० सुई कुशाग्रमात्र यतना से लेवे रखे तो सम्वर। एवं २०।

उत्कृष्ट ५७ भेद

जिसमें २२ परिसह—१ क्षुधा परिसह २ पिपास परिसह ३ शीत परिसह ४ उष्ण परिसह ५ दंसमसग परिसह ६ अचेल परिसह ७ अरति परिसह ८ स्त्री परिसह ९ चर्या परिसह १० निसिहिया परिसह ११ सय्या परिसह १२ अक्रोश परिसह १३ वध परिसह १४ याचना परिसह १५ अलाभ परिसह १६ रोग परिसह १७ तणफास परिसह १८ जल परिसह १९ सत्कार पुरस्कार २० प्रज्ञा परिसह २१ अज्ञान परिसह २२ दर्शन परिसह।

आठ प्रवचन=पांच समिति और तीन गुप्ति। पांच समिति जैसे—१ इर्या समिति २ भाषा समिति ३ एषणा समिति ४ आदान भंड मत्त निक्षेपण समिति ५ उच्चार पासवण खेल जल्ल मल्ल सिंघाण परिठावणिया समिति।

१ इर्या समिति के चार भेद—१ आलंबण २ काल ३ मार्ग ४ यत्ना।

आलंबण के तीन भेद—१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र।

काल का एक भेद—इर्या का काल दिवस का।

मार्ग का एक भेद-संयम मार्ग चले असंयम मार्ग वरजे।

यत्ना के चार भेद-द्रव्य क्षेत्र काल भाव। द्रव्य से दया शोधता हुआ द्रव्य काल देख कर चले।

१ शब्द २ रूप ३ गन्ध ४ रस ५ स्पर्श ६ वायणा ७ पूछना ८ परियट्टना ९ अनुपेहा १० धर्मकथा।

क्षेत्र से-साढ़े ३॥ हाथ प्रमाण देखकर चले।

काल से-दिन को देखकर रात्रि को पूंज कर चले भाव से उपयोग सहित गुण से निर्जरा के हेतु।

२ भाषा समिति के चार भेद-१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से आठ बात वर्ज के भाषा बोले-१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ हास्य ६ भय ७ मुखरि वचन ८ विकथा।

क्षेत्र से-जहां विचरे सब को साताकारी-प्रिय भाषा बोले।

काल से-पहर रात्रि बाद ऊंचे स्वर से न बोले।

भाव से-उपयोग सहित। गुण से निर्जरा के हेतु।

४ एषणा समिति के चार भेद-१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से-साधु अपनी वृत्ति अनुसार ४२ दोष टाल कर आहार पानी ग्रहण करे। गृहस्थी अपनी वृत्ति अनुसार निर्दोष

अपने हक का ग्रहण कर। अन्य के हक पर अधिकार न कर।

क्षेत्र से–साधु अध योजन उपरान्त आहार पानी ले नाव नहीं, लाव नहीं। शौच वास्ते नल उपरान्त भी ले जा सकता है। गृहस्थ–राष्ट्र धर्म को हानि न पहुंचे वहां तक व्यावहारिक कार्य करता हुआ राष्ट्रदेश का हानि न पहुचाव।

काल से–साधु पहले पहर का आहार पानी चौथ पहर न रक्खे। गृहस्थी बिगड जाने वाले अन्य (दूसरों) को हानिकारक या जिससे पाप की वृद्धि हो एस द्रव्यों का सचय चिरकाल तक न करे।

भाव से–साधु पाच माडले के दोष टालकर आहार पानी भोगे।

गाथा

सयोजनापमाणे–इगाल धूम कारणे पन्मा, वसहि वहरतरवा रसह उव्वम योगा।

गृहस्थ भी रसनेन्द्रिय के वश न होवे।

आदाण भड मत्त निक्षेपणा समित के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से–भंडोपगरण वस्त्र पात्र आदि मर्यादा से अधिक न रक्खे।

क्षेत्र से–सुदूर विस्तर न रक्खे।

काल से–समय पर प्रतिलेखना करे।

दसवें–त्रस प्राणी बीज हरी पर न परठे। परठ के वोसरे वोसरे करे।

क्षेत्र से–जहां विचरे।

काल से–दिन को देखकर रात्रि को परिमार्जन करके परठे।

भाव से–उपयोग सहित, गुण से निर्जरा का हेतु।

तीन गुप्ति–१ मनोगुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति।

मनोगुप्ति के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से–संरभ, समारभ आरभ में मन प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्ते तो फल न लगने देवे। यदि फल भी लगे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से–जहां विचरे।

काल से–आयु पर्यन्त।

भाव से–उपयोग सहित।

गुण से–निर्जरा का हेतु।

वचन गुप्ति के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से–संरभ, समारभ, आरभ में वचन प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्तावे तो फल न लगने देवे, यदि फल भी लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से–जहां विचरे।

काल से–आयु पर्यन्त।

भाव से—उपयोग सहित।

गुण से—निर्जरा के हेतु।

काय गुप्ति के ४ भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से—संरंभ समारंभ, आरंभ में काया प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्तन चाहे तो फल न लगने दे यदि फल लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से—जगत विचरे।

काल से—आयु पर्यन्त।

भाव से—उपयोग सहित।

गुण से—निर्जरा के हेतु।

१० प्रकार का यतिधर्म

१ क्षान्ति २ मुक्ति ३ आर्जव ४ मार्दव ५ लाघव ६ सत्य ७ संयम ८ तप ९ त्याग १० ब्रह्मचर्यवास।

१२ प्रकार की भावना

१ अनित्य भावना भरत चक्रवर्ती ने भावी। २ अशरण भावना अनाथी मुनि ने भावी। ३ संसार असार भावना शालिभद्र जी ने भावी। ४ एकत्व भावना नमिराज ऋषीश्वर ने भावी। ५ अन्य भावना मृगापुत्र जी ने भावी। ६ अशुचि भावना सनत्कुमार चक्री ने भावी। ७ आश्रव भावना समुद्रपाल ने भावी। ८ संवर भावना केशी गौतम जी ने भावी। ९ निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भावी। १० धर्म दुर्लभ भावना धर्म रुचि अणगार ने भावी। ११ लोक स्वरूप भावना

शिवराज ऋषि ने भायी। १२ बोध दुर्लभ भावना आदिनाथ जी के ९८ पुत्रों ने भायी।

चारित्र पांच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

इति संवरतत्त्व समाप्त।

७ निर्जरातत्त्व

निर्जरातत्त्व किसे कहते हैं? जीवरूपी वस्त्र पापरूपी मैल से जो मलिन हो रहा है उसको ज्ञान रूपी जल और तप संयम रूपी साबुन से धोकर जो आत्मा को निर्मल कर उसको निर्जरा तत्त्व कहते हैं।

अथवा निर्जरा तत्त्व के मुख्य भेद हैं और प्रकार का तप—

१ अनशन २ ऊनोदरी ३ भिक्षाचरी ४ रस परित्याग ५ कायक्लेश ६ प्रतिसंलीनता यह छ प्रकार का आभ्यन्तर (अन्दर का) तप ७ प्रायश्चित्त ८ विनय ९ वैयावृत्य १० स्वाध्याय ११ ध्यान १२ व्युत्सर्ग। यह छ प्रकार का बाहर का तप है।

अनशन के दो भेद—१ इत्वरकाल—थोड़े समय का २ [illegible]—आयुपर्यन्त का।

इत्वरकाल के छ भेद—१ श्रेणि तप २ प्रतर तप ३ घन तप ४ वर्ग तप ५ वर्गावर्ग तप ६ प्रकीर्ण तप।

श्रेणि तप के १४ भेद—१ व्रत २ बेला ३ तेला ४ चौला ५ पचौला ६ छौला ७ सतौला ८ अर्धमास ९ मास १० दो मास ११ तीन मास १२ चार मास १३ पांच मास १४ छ मास तप करे।

प्रतर तप के १६ भेद—व्रत, बेला, तेला चौला।
बेला तेला चौला व्रत।
तेला चौला व्रत बेला।
चौला व्रत बेला, तेला।

१	[illegible]	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

घण तप के ६४ भेद—१६ व्रत, १६ बेले, १६ तेले, १६ चौले तप करे।

वर्ग तप के ४०९६ चार हजार छयाणव भेद। जैसे—एक हजार चौबीस १०२४ व्रत, एक हजार चौबीस १०२४ बेले, एक हजार चौबीस १०२४ तेले, एक हजार चौबीस चौले तप करें। एव ४०९६ हुए।

यथाख्यात संयम के एक करोड़ सड़सठ लाख सतहत्तर हजार दो सौ सोलह भंग। (१६७७७२१६) अथवा— ४१ इकतालीस लाख चौरानवे हजार तीन सौ चार ४१९४३०४ मन ४१९४३०४ वचन ४१९४३०४ तन ४१९४३०४ शील। एवं १६७७७२१६ भंग।

यह सब और यथाख्यात सब साथ और से किया जाता है। आज कल पंचम काल में अनुमोदना की क्रिया हीन से नहीं हो सकते।

आगे तप के १० भेद—१ नवकारसी २ पोरसी ३ बेपोरसी ४ एकासना ५ एकलठाण ६ निविगय ७ आयंबिल ८ अभिग्रह ९ चरम पच्चक्खाण १० इत्यादि दत्ती आदि अनेक प्रकार का पच्चक्खाण है जिससे आयु कर्म के भेद। सब पच्चक्खाण सहाय दूसरे सब का सहाय पच्चक्खाण सहाय।

अनवस्थाप्य के ६ भेद—१ नगर के अन्दर करे। २ नगर के बाहर करे। ३ कारण से करे। ४ बिना कारण से करे। ५ पराक्रम सहित करे। ६ पराक्रम रहित करे।

पारांचिक के ७ भेद—१ नगर में करे २ नगर से बाहर करे ३ कारण से करे ४ बिना कारण से करे ५ पराक्रम सहित करे ६ पराक्रम रहित करे ७ मुनि के सहाय करे।

पर्यायच्छेद के ५ भेद—१ नगर में करे २ नगर से बाहर

कर ... सागा म ... ... इन्द्रत चल-
नार ... म ... ... मे हो
रिहत रह

ऊनोदरी ... ... ऊनोदरी।
... ... नोदरी २
उपधी ऊनोदरी ...

आहार ऊनोदरी ... ... कवल
आ ... कवल ...

पुरुष एक कवल ... और ... का आहार करे
तो जघन्य ऊनोदरी एक ... छोड़ एक का आहार करे तो
उत्कृष्ट ऊनोदरी। बाकी म ... ऊनोदरी।

स्त्री एक कवल छोड़ और ... का आहार करे तो
जघन्य ऊनोदरी और २७ छोड़ और एक का आहार करे तो
उत्कृष्ट ऊनोदरी। बाकी मध्यम ऊनोदरी।

नपुंसक एक कवल छोड़ २३ का आहार करे तो जघन्य
ऊनोदरी और २३ कवल छोड़ एक का आहार करे तो उत्कृष्ट
ऊनोदरी। बाकी मध्यम ऊनोदरी।

उपधि ऊनोदरी भण्डोपकरण–वस्त्रपात्र

... १६–भिक्षा सकोच के
१।
ऊनोदरी के भेद–१ अल्प

अल्प माया ४ अल्प लोभ ५ अल्प झन्झ (भांगी) ६ अल्प स्विडना ७ अल्प कलह ८ अल्प तुम तुमाट ।

भिक्षाचरी के ४ भेद

१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य भिक्षाचरी के २६ भेद—१ उक्खित्तचरी २ णिक्खित्तचरी ३ उक्खित्त णिक्खित्तचरी ४ निक्खित्त उक्खित्त चरी ५ वट्टिज्जमानचरी ६ साहरिज्जमानचरी ७ उवनीतचरी ८ अवनीतचरी ९ उवनीत अवनीतचरी १० अवनीत उवनीतचरी ११ ससट्ठचरी १२ असंसट्ठचरी १३ तज्जातससट्ठचरी १४ अण्णाय चरी १५ मोनचरी १६ दिट्ठलाभ १७ अदिट्ठलाभ १८ पुट्ठलाभे १९ अपुट्ठलाभे २० भिक्खलाभ २१ अभिक्खलाभे २२ अनगिलाय २३ उवणिहिए २४ परिमित पिंडवाइ २५ सुद्धेषणाय २६ संखादत्तिय ।

क्षेत्र भिक्षाचरी के ८ भेद—१ पेड के आकार २ अध पेड के आकार ३ सिंघाड के आकार ४ गाय के आकार ५ गायमूत्र के आकार ६ पतंग के आकार ७ जाते फरसे जाते हुए न फरसे ८ जाते हुए फरसे आते हुए न फरसे ।

कालभिक्षाचरी के चार भेद—१ पहले पहर लावे पहले पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे । २ दूसरे पहर लावे दूसरे पहर भोगे बाकी तीन पहर त्यागे ३ तीसरे पहर लावे तीसरे पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे ४ चौथे पहर लावे चौथे पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे ।

१० प्रकार से आलोचना करता हुआ दोष लगावे-
कांपता कांपता आलोचे तो दोष लगावे २ अनुमान प्रमाण से
आलोचे तो दोष लगावे ३ देखा हुआ आलोचे अनदेखा हुआ
न आलोचे तो दोष लगावे ४ सूक्ष्म सूक्ष्म आलोचे बादर बादर
न आलोचे तो दोष लगावे । ५ बादर बादर आलोचे सूक्ष्म
सूक्ष्म न आलोचे तो दोष लगावे गुप्त गुप्त अव्यक्त
शब्दों से आलोचे तो दोष लगावे ७ ऊंचे स्वर से आलोचे तो
दोष लगावे अनजान के आगे आलोचे तो दोष लगावे
९ बहुतों के आगे आलोचे तो दोष लगावे १० प्रायश्चित्त के
पास आलोचे तो दोष लगावे ।

१० गुणों का धारक आलोचना करता है १ जातिवान
२ कुलवान ३ विनयवान ४ ज्ञानवान दर्शनवान ६ चारित्र
वान ७ क्षमावान ८ वैराग्यवान ९ पांचों इन्द्रियों का दमन
वाला १० अमाई अपच्छानाई प्रायश्चित्त लेकर पश्चात्ताप
करने वाला ।

१० दस गुणों के धारक के पास आलोचना करनी
चाहिये-१ आचारवन्त हो २ धारणावन्त हो ३ पांच व्यव-
हारों का ज्ञाता हो जैसे-आगमव्यवहार सूत्रव्यवहार,
आज्ञा व्यवहार धारणाव्यवहार जीतव्यवहार । ४ प्राय
श्चित्त देकर शुद्ध करने की सामर्थ्य हो ५ लज्जा छुड़ाने
की सामर्थ्य रखता हो ६ थोड़े थोड़े करके प्रायश्चित्त देवे ७
इस लोक और परलोक का भय दिखावे ८ आलोचा हुआ दोष

प्रगट न करे ९ प्रियधर्मी होवे १० दृढधर्मी होवे ।

१० प्रकार का प्रायश्चित–१ आलोचना प्रायश्चित २ प्रति
क्रमण प्रायश्चित ३ तदुभय प्रायश्चित ४ विवेक प्रायश्चित
व्युत्सर्ग प्रायश्चित ६ तप प्रायश्चित ७ छेद प्रायश्चित
मूलप्रायश्चित ९ अनुठप्पा प्रायश्चित १० पाडुचिया प्रायश्चि

विनय के सात भेद १ ज्ञान विनय २ दर्शन विनय
चारित्र विनय ४ मन विनय ५ वचन विनय ६ कायवि
७ लोकोपचार विनय ।

ज्ञान विनय के ५ भेद–१ मति ज्ञानी की विनय
२ श्रुत ज्ञानी की विनय करे ३ अवधिज्ञानी की विनय
४ मन पर्यव ज्ञानी की विनय करे ५ केवल ज्ञानी की वि
करे ।

दर्शन विनय के दो भेद–१ सुश्रूषा विनय २ अण
सायणा विनय ।

सुश्रूषा विनय के १० भेद–१ गुरु आवे तो खड़ा
२ आसन बिछावे ३ चार प्रकार का निर्दोष आहार प
लाकर देवे ४ गुरु की आज्ञानुसार वर्ते ५ वन्दना
(गुणग्राम करे) ६ नमस्कार करे ७ सम्मान देवे ८ आ
तो स्वागत करे ९ रहे तो सेवा भक्ति करे १० जावे
पहुंचाने जावे ।

अन्याशातनाविनय के ४५ भेद–तीर्थंकर अरिह
देव की विनय करे २ अरिहन्त प्ररूपित धर्म की विनय

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चलना (पीछे आना) ७ उपयोग से पांचों इन्द्रियों को शान्ति से वश कर यत्न से करना।

अप्रशस्त काया विनय के ७ भेद—१ बिना उपयोग चलना २ बिना उपयोग खड़े रहना ३ बिना उपयोग बैठना ४ बिना उपयोग सोना [illegible] बिना उपयोग किसी चीज को उलंघना ६ बिना उपयोग पांव रखना ७ बिना उपयोग इन्द्रियों को [illegible] से शान्ति से [illegible]।

वैयावच्च के १० भेद—१ आचार्य की वैयावच्च करे २ उपाध्याय की वैयावच्च करे ३ स्थविर की वैयावच्च करे ४ कुल की वैयावच्च करे [illegible] गण की वैयावच्च करे ६ संघ की वैयावच्च करे ७ नव दीक्षित की वैयावच्च करे ८ रोगी की वैयावच्च करे [illegible] तपस्वी की वैयावच्च करे १० साधर्मी की वैयावच्च करे

स्वाध्याय के [illegible] भेद—१ वाचना २ पृच्छना ३ परावर्तना ४ अनुप्रेक्षा [illegible] धर्मकथा।

ध्यान के ४ भेद—१ आर्त्तध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

व्युत्सर्ग के २ भेद—१ द्रव्य २ भाव।

[illegible] १ अप्रशस्त [illegible] आलम्बन १। प्रशस्त [illegible] आलम्बन २। [illegible]

बन । ३ आर्जव-सरल बन माया कपट त्याग । ४ मार्दव-मद का त्याग कर कोमल परिणामी (विनयी) बन ।

चार अनुप्रेक्षा (विचार) १ अनन्तवर्तितानुप्रेक्षा संसार की अनन्तता चिन्तन (विचार) । २ विपरिणामानुप्रेक्षा वस्तु (प्रकृति) प्रतिक्षण परिवर्तनशील है । ३ अशुभानुप्रेक्षा कर्मों का फल अशुभ है । ४ अपायानुप्रेक्षा जीवों [illegible] अर्थात् [illegible] सहन नहीं हो सकता ।

व्युत्सर्ग के [illegible]

१ द्रव्य व्युत्सर्ग [illegible] भाव व्युत्सर्ग ।

द्रव्य व्युत्सर्ग के [illegible] शरीर [illegible] व्युत्सर्ग [illegible] गुण व्युत्सर्ग । [illegible]

[illegible] व्युत्सर्ग [illegible] व्युत्सर्ग ।

इति निर्जरातत्त्व समाप्त

८ बन्धतत्त्व

बन्ध तत्त्व किसे कहते हैं ?

[illegible]

मिलकर आत्मप्रदेशों पर ठहर जाते हैं उन्हें भावकर्म कहते हैं।

और कर्मों का आना बन्धरूप होकर आत्मप्रदेशों पर जम जाना [illegible] बन्ध कहते हैं। इसलिए इसको बन्धतत्त्व कहते हैं।

बन्धतत्त्व के मुख्य ४ भेद हैं १ प्रकृतिबन्ध—जो कर्म बंधते हैं उनमें अलग अलग काम करने का स्वभाव पड़ना। २ प्रदेशबन्ध—जो कर्म बंधे उनमें कर्म वर्गणाओं की संख्या होना। ३ स्थितिबन्ध—कर्मों का बंधे रहने के समय की अवधि (मर्यादा) का होना। ४ अनुभागबन्ध—फल देने समय कर्मों का तीव्र या मन्द फल होना।

मन वचन काय के योगों के निमित्त से आत्मा प्रदेश [illegible] और कषायों की तीव्रता या मन्दता के अनुसार स्थिति और अनुभाग बन्ध होते हैं।

[illegible] आठ कर्मों की १४८ प्रकृतियां।

ज्ञानावरण कर्म की ५ प्रकृतियां—१ मतिज्ञानावरणीय २ श्रुतज्ञानावरणीय ३ अवधिज्ञानावरणीय ४ मनःपर्ययज्ञानावरणीय ५ केवलज्ञानावरणीय।

दर्शनावरण कर्म की ९ प्रकृतियां—१ चक्षुदर्शनावरणीय २ अचक्षुदर्शनावरणीय ३ अवधिदर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रानिद्रा ७ प्रचला ८ प्रचलाप्रचला ९ स्त्यानगृद्धि।

वेदनीय कर्म की दो प्रकृतियां—१ सातावेदनीय २ असातावेदनीय

मोहनीयकर्म की २८ प्रकृति–निसके दो भेद–१ चारित्र मोहनीय २ सम्यक्त्व मोहनीय।

चारित्रमोहनीय की २५ प्रकृति तो कि पापतत्त्व में आ चुकी हैं।

और सम्यक्त्व मोहनीय की ३ प्रकृति–१ मिथ्यात्व मोहनीय २ सम्यक्त्वमोहनीय ३ मिश्रमोहनीय।

आयुष्कर्म की ४ प्रकृति–१ नरक की आयुष २ तिर्यञ्च की आयुष ३ मनुष्य की आयुष ४ देवता की आयुष।

नाम कर्म की ९३ प्रकृति जिसमें ३७ प्रकृति पुण्यतत्त्व में हैं और ३४ प्रकृति पापतत्त्व में। यह ७१ हुई। बाकी २२ प्रकृति इस प्रकार हैं।

५ बन्धन ५ संघातन २० वर्ण गन्ध रस स्पर्श के। इनमें से ८ वर्णादि पुण्य और पापतत्त्व में से छोड़ दिये। बाकी रही बाइस। ३७ ३४ और २२ सब मिलकर नाम कर्म की ९३ प्रकृति हुई।

गोत्र कर्म की २ प्रकृति–१ नीचगोत्र २ उच्चगोत्र।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति–१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोग अंतराय ४ उपभोग अन्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय। आठों कर्मों की सब मिलकर १४८ प्रकृति हुई।

१ प्रदेशबन्ध

आठों कर्मों के दल का समूह तथा आत्मा के प्रदेशों के ऊपर आठों कर्मों की अनन्त वर्गणा, अर्थात् एक एक

[illegible] की [illegible] ।

[illegible]—[illegible] का [illegible] । [illegible] का [illegible] करते हैं । [illegible] का एक भाग (टुकड़) का [illegible] करते हैं । और [illegible] का [illegible] करते हैं [illegible] पुद्गल (प्रकृति) [illegible] आवश्यक है ।

[illegible]

[illegible] कर्मों की [illegible] । [illegible] कर्मों की [illegible] कोड़ाकोड़ सागर की [illegible] ।

[illegible] की [illegible] की उत्कृष्ट ७० कोड़ाकोड़ सागर की [illegible] वर्ष का ।

[illegible] की [illegible] की उत्कृष्ट [illegible] कोड़ाकोड़ सागर की [illegible] वर्ष का ।

[illegible] की [illegible] की उत्कृष्ट ३ सागर की [illegible]

३ [illegible]

[illegible] है [illegible] है ।

[illegible] का [illegible]

[illegible] [illegible]

पडिणियाय ३ ज्ञान अन्तरायेण ४ ज्ञान प्रद्वेषेण ५ ज्ञान अत्यासायणाय ६ ज्ञानविसंवादना जोगेण।

ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकार से भोगा जाता है—१ सोयावरण २ सोयविन्नाणावरण ३ नेत्तावरण ४ नेत्तविन्नाणावरण ५ घाणावरण ६ घाणविन्नाणावरण ७ रसावरण ८ रसविन्नाणावरण ९ फासावरण १० फासविन्नाणावरण।

दर्शनावरणीय कर्म ६ प्रकार से बन्धता है—१ दर्शन पडिनियाय २ दर्शननिह्नवणियाय ३ दर्शन अन्तरायेण ४ दर्शन प्रद्वेषेण ५ दर्शन अत्यासायणाय ६ दर्शनविसंवादना जोगेण।

२ दर्शनावरणीय कर्म ९ प्रकार से भोगा जाता है—१ चक्षु दर्शनावरणीय २ अचक्षु दर्शनावरणीय ३ अवधि दर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानर्द्धि निद्रा।

सातावेदनीय कर्म जीव १० प्रकार से बांधता है—

१ प्राणानुकम्पनीयाय २ भूतानुकम्पनीयाय ३ जीवानुकम्पनीयाय ४ सत्वानुकम्पनीयाय ५ अदुःखनियाय ६ असोचनियाय ७ अझूरणियाय ८ अटिप्पणियाय ९ अपिट्टणियाय १० अपरितावणियाय।

सातावेदनीय कर्म जीव ८ प्रकार से भोगता है—

१ मनोज्ञशब्द २ मनोज्ञ रूप ३ मनोज्ञ गन्ध ४ मनोज्ञ रस ५ मनोज्ञ स्पर्श ६ मन को सुखदाई ७ वचन को सुखदाई ८ काया को सुखदाई।

असातावेदनीय कर्म जीव १२ प्रकार से बांधते हैं—

१ प्राणभूतजीव सत्व इनको दु ख दियाय २ सोयणियाय ३ झूरणियाय ४ तिप्प णियाय ५ पिट्टणियाय ६ परितापनियाय ७ बहु दु खणियाय ८ बहुसोयणियाय ९ बहुझूरणियाय १० बहुतिप्पणियाय ११ बहुपिट्टणणियाय १२ बहुपरितापनियाय ।

असातावेदनीय कर्म ८ प्रकार से भोगते हैं—

१ अमनोज्ञ शब्द २ अमनोज्ञ रूप ३ अमनोज्ञ गन्ध ४ अमनोज्ञ रस ५ अमनोज्ञ स्पर्श ६ मन को दु खदाइ ७ वचन को दु खदाइ ८ काया को दु खदाइ ।

मोहनीय कर्म ६ प्रकार से बांधता है—

१ तिव्रक्रोध २ तिव्रमान ३ तिव्रमाया ४ तिव्रलोभ ५ तिव्रदर्शनमोहनीय ६ तिव्रचारित्रमोहनी ।

मोहनीय कर्म जीव ५ प्रकार से भोगते हैं—

१ मिथ्यात्व मोहनीय २ मिश्र मोहनीय ३ सम्यक्त्व मोहनीय ४ कषाय मोहनीय ५ नोकषाय मोहनीय ।

आयु कर्म १६ प्रकार से बांधा जाता है ।

चार प्रकार से नरक का आयुष्य बांधी जाता है—

१ महा आरंभिया २ महापरिग्रहिया ३ कुणय आहारे ४ पचेन्द्रिय वध ।

चार प्रकार से तिर्यञ्च का आयुष्य बांधी जाता है—

१ माया करने से २ माया में माया करने से ३ झूठ

मोल मोल माप करने से ८ अन्य वचन—अपना लेप दूसरों के सिर पर लगाने से अर्थात् झूठ बोलने से ।

चार प्रकार से मनुष्य की आयु बांधी जाती है—

१ प्रकृति भद्दियाए २ प्रकृति विनियाए साणुक्कोसियाए ४ अमच्छरियाए ।

चार प्रकार से देवता की आयु बांधी जाती है—

१ सराग संयम पालने से २ संयमासंयम से ३ बाल तप से ४ अकाम निर्जरा से ।

आयुष्कर्म जीव ४ प्रकार से भोगता है—

१ नरक गति में २ तिर्यञ्च गति में मनुष्य गति में ४ देवता गति में ।

नाम कर्म आठ प्रकार से बांधा जाता है ।

चार प्रकार से शुभ नाम कर्म बांधा जाता है—

१ काय उज्जुए २ भाव उज्जुए ३ भासा उज्जुए ४ अविसंवादण जोगेणं ।

१४ प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है—

१ इष्ट शब्द २ इष्ट रूप ३ इष्ट गंध ४ इष्ट रस ५ इष्ट स्पर्श ६ इष्ट गति ७ इष्ट स्थिति ८ इष्ट लावण्य ९ इष्ट यशोकीर्ति १० इष्ट उट्ठाण कम्म बलवीर्य पुरुषाकार ११ इष्ट स्वर १२ कान्त स्वर १३ प्रिय स्वर १४ मनोज्ञ स्वर ।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकार से बांधा जाता है—

१ काया अनउज्जुए २ भाव अनउज्जुए ३ भासा अनउज्जुए ४ विसंवादजोगेणं ।

अशुभ नाम जीव १४ प्रकार से भोगते हैं—

१ अनिष्ट शब्द २ अनिष्ट रूप ३ अनिष्ट गन्ध ४ अनिष्ट रस ५ अनिष्ट स्पर्श ६ अनिष्ट गति ७ अनिष्ट स्थिति ८ अनिष्ट लावण्य ९ अयशोकीर्ति १० अनिष्ट उट्ठाण कम्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रमेण ११ अनिष्ट स्वर १२ अकंत स्वर १३ दीन हीन स्वर १४ अमनाम स्वर।

गोत्र कर्म सोलह प्रकार से बांधा जाता है।

आठ प्रकार का मद करने से नीच गोत्र बांधा जाता है—

१ जातिमद २ कुलमद ३ बलमद ४ रूपमद ५ तप मद ६ लाभमद ७ सूत्र (शास्त्र) विद्यामद ८ ऐश्वर्य मद यह आठ मद करने से जीव नीच गोत्र में पैदा होता है।

आठ प्रकार से भोगता है—

१ जाति हीन २ कुल हीन ३ बल हीन ४ रूप हीन ५ तप हीन ६ लाभ हीन ७ सूत्र शास्त्र हीन ८ ऐश्वर्य हीन।

आठ मद न करे तो जीव ऊंच गोत्र बांधता है—

१ जाति मद न करे २ कुल मद न करे ३ बल मद न करे ४ रूप मद न करे ५ तप मद न करे ६ लाभ मद न करे ७ सूत्र शास्त्र मद न करे ८ ऐश्वर्य मद न करे।

आठ प्रकार से भोगा जाता है—

१ जाति श्रेष्ठ २ कुल श्रेष्ठ ३ बल श्रेष्ठ ४ रूप श्रेष्ठ ५ तप श्रेष्ठ ६ लाभ श्रेष्ठ ७ शास्त्र श्रेष्ठ ८ ऐश्वर्य श्रेष्ठ।

अन्तराय कर्म ५ प्रकार से जीव बांधते हैं—

१ दान अन्तराय २ लाभ अन्तराय ३ भोग अन्तराय

अतीर्थंकर सिद्ध ५ गृहस्थलिंगसिद्ध ६ अन्यलिंगसिद्ध ७ स्वलिंगसिद्ध ८ स्त्रीलिंगसिद्ध ९ पुरुषलिंगसिद्ध १० नपुंसकलिंगसिद्ध ११ प्रत्येकबुद्ध सिद्ध १२ स्वयंबुद्ध सिद्ध १३ बुद्धबोधित सिद्ध १४ एकसिद्ध १५ अनेक सिद्ध एव सिद्ध ।

चार प्रकार से जीव मोक्ष में जाते हैं—

१ सम्यक् ज्ञान २ सम्यक् दर्शन ३ सम्यक् चारित्र ४ सम्यक् [illegible] [illegible] ज्ञानदर्शन चारित्र तप ॥४॥

नौ द्वार

१ सत्पदप्ररूपणाद्वार २ द्रव्यप्रमाणद्वार ३ क्षेत्र[illegible] द्वार ४ [illegible] ५ [illegible]द्वार ६ भागद्वार ७ भावद्वार ८ अल्प[illegible] [illegible] बहुत्वद्वार ।

[illegible]

४ [illegible] के भेद

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ।

३ पूइकम्मे (पूति कम) निर्दोष आहार में आधाकर्मी की मिलावट हाव वह आहार लेवे तो पूतिकम दोष लगे।

४ मिस्सीजाय (मिश्रित) जो गृहस्थ अपने और साधु दोनों के लिये बनावे वह आहार लेवे तो मिश्रित दोष लगे।

५ ठवणा (स्थापना) साधु के ही निमित्त स्थापन करके रखे और फिर ना देवे वह आहार लेवे तो स्थापना दोष लगता है।

६ पाहुडियाय (प्राभृतिक) अतिथि के निमित्त जो भोजन हो और थोडा होने उसे अतिथि को देने से पहले लेवे तो दोष।

७ पाओर (प्रादुष्करण) अंधेरे में दीवा, बैटरी, बिजली आदि का प्रकाश करके देवे ऐसा आहार लेवे तो दोष।

८ कीय (क्रीत) साधु के निमित्त मोल लिया हुआ आहार लेवे तो दोष।

९ पामिच्चे (अपमित्य) साधु के निमित्त उधारा लिया हो, वह आहार लेवे तो दोष।

१० परियट्टिय (परिवर्तित) साधु के निमित्त अपना आहार देकर अन्य से और किसी प्रकार का आहार लेवे ऐसा आहार को साधु लेवे तो दोष।

११ अभिहड (अभिहृत) साधु के निमित्त सन्मुख रास्ते में जा उपाश्रय में आहार लावे उसे लेवे तो दोष।

१२ उदभिन्ने (उदभिन्न) लेपन करके बंध किया हुआ खुलवा कर लेवे तो दोष।

१३ मालोहडे (मालापहृत) ऊंची नीची तिरछी विषम जगह में रक्खा हुआ आहार लेवे तो दोष क्योंकि दाता को दुःख का कारण है।

१४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य) निर्बल से छीन कर दिलावे वह आहार लेवे तो दोष।

१५ अनिसिट्ठे (अनिसृष्ट) दो मनुष्यों का साझे का आहार उन दोनों की मरजी के बिना लेवे तो दोष।

१६ अज्झोयरे (अध्यवपूरक) आहार थोड़ा होने के कारण साधु के निमित्त उसमें और आरम्भ करके मिला कर देवे जैसे-थोड़ी दाल है और उसमें पानी मिला कर अधिक बना दी ऐसे भोजन को लेवे तो दोष।

इति १६ उद्गम दोष समाप्त।

१६ उत्पादना के दोष

धाई दूई निमित्ते आजीव वणीमगे तिगिच्छाए।
कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस दोसा ॥३॥
पुव्वि पच्छासंथव, विज्जा मंते य चुण्ण जोगे य।
उप्पायणाए दोसा, सोलसमे मूलकम्मे य ॥४॥

१ धाई (धात्री) धाय माता की तरह किसी के बच्चों को खिला करके आहार लेवे तो दोष।

२ दूई (दूती) दूतपने का काम करके आहार लेवे तो दोष।

३ निमित्ते (निमित्त) भूत भविष्यत वर्तमान आदि निमित्त ज्योतिष बता करके आहार लेवे तो दोष।

८ अपरिणाये (अपरिणत) पूर्ण शस्त्र परिणम्या बिना अर्थात् अचित्त हुए बिना लेवे तो दोष।

९ लित्त (लिप्त) थोड़े समय की (तत्काल की) लेपन की हुई भूमि पर पांव करके आहारादि लेवे तो दोष।

१० छड्डिय (छर्दित) गिरता पड़ता हुआ आहार लेवे तो दोष।

१० एषणा के दोष समाप्त।

५ मांडले के दोष

मनोयणापमाणे, इंगालधूम कारण पढ़मा‌वसिय बाहिर तग्गा ॥६॥

६ कारण से आहार का सेवन करे

वेयणा वेयावच्च इरिय ट्ठाए संजमट्ठाए।
तहपाणवत्तियाए छट्ठंपुणधम्मचिंताए ॥७॥

६ कारण से आहार का परित्याग करे

आयंके उवसग्गे तितिक्खयाबंभचेरगुत्तिए।
पाणीदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥८॥

इति आहार पाणी के ४७ दोष समाप्त।

पाच भरत पाच एरावत की आरों के प्रमाण। पहला आरा लगते तीन कोस की। पहला उतरते दूसरा लगते दो कोस की। दूसरा उतरते तीसरा लगते एक कोस की। तीसरा उतरते चौथा लगते ५०० धनुष की। चौथा उतरते पाचवा लगते ७ हाथ की। पाचवा उतरते छठा लगते १ हाथ की। छठा उतरते पहला लगते एक हाथ से न्यून की। पहला उतरते दूसरा लगते ७ हाथ की। दूसरा उतरते तीसरा लगते ५०० धनुष की। तीसरा उतरते चौथा लगते एक कोस की। चौथा उतरते पाचवा लगते दो कोस की। पाचवा उतरते छठा लगते तीन कोस की।

तीर्थङ्करों की अवगाहना

१	श्री ऋषभदेव भगवान की	५००	धनुष की
२	श्री अजितनाथ ,,	४५०	,,
३	श्री सम्भवनाथ ,,	४००	,,
४	श्री अभिनन्दन ,,	३५०	,,
५	श्री सुमतिनाथ	३००	,,
६	श्री पद्म० ,,	२५०	,,
७	श्री सुपार्श्वनाथ ,,	२००	,,
८	श्री चन्द्रप्रभु ,,	१५०	,,
९	श्री सुविधिनाथ ,,	१००	,,
१०	श्री शीतलनाथ ,,	९०	,,
११	श्री श्रेयांसनाथ ,,	८०	,,

९	महापद्म		२०	,,
१०	हरिषेण	,,	१५	,,
११	जयनाम		१२	,,
१२	ब्रह्मदत्त		७	,,

वासुदेवों की अवगाहना

१	त्रिपृष्ठ	की	८०	धनुष की
२	द्विपृष्ठ		७०	,,
३	स्वयंभू	,,	६०	,,
४	पुरुषोत्तम		०	,,
५	पुरुषसिंह		४५	,,
६	पुरुष पुण्डरीक		२९	,,
७	दत्त		२६	,,
८	लक्ष्मण		१६	,,
९	कृष्ण		१०	,,

बलदेवों की अवगाहना

१	अचल	की	८०	धनुष की
२	विजय	,,	७०	,,
३	भद्र	,,	६०	,,
४	सुप्रभ	,,	५०	,,
५	सुदर्शन	,,	४	,,
६	आनन्द	,,	२९	,,
७	नन्दन	,,	२६	,,

१२ पर्याप्त द्वार

पर्याप्त छः हैं जो कि पहिले बताए गए हैं। एकेन्द्रिय में ४ पर्याप्त होते हैं। जैसे कि १ आहार २ शरीर ३ इन्द्रिय ४ श्वासोश्वास। तीन विकलेन्द्रियों असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में ५ पर्याप्त हैं। किन्तु मन पर्याप्त नहीं। और असंज्ञी मनुष्य में चार पर्याप्त होते हैं। अपितु मन पर्याप्त और भाषा पर्याप्त नहीं होते। संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्य नारकी और देवताओं में छः पर्याप्त होते हैं।

१३ दृष्टि द्वार विषय

दृष्टियाँ ३ हैं—१ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र। नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी, वैमानिक १२ वे देवलोक पर्यन्त तक ये तीनों होती हैं। नव ग्रैवेयक विमानों में सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि यही दो होती हैं। अपितु पांच अनुत्तर विमानों में एक ही सम्यग् दृष्टि होती है। पांच स्थावर पर्याप्त और अपर्याप्त, तीनों विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पर्याप्त में एक मिथ्यादृष्टि होती है। असंज्ञी मनुष्य ५६ अन्तरद्वीपों के युगलियों में भी एक मिथ्यादृष्टि होती है। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च अपर्याप्त ३ प्रकार के युगलियों में २ दृष्टि होती हैं। जैसे कि सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि। संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय और संज्ञी मनुष्यों में तीन दृष्टि होती हैं। जैसे कि १ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र।

५ असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय इनमें अज्ञान (१ मति २ श्रुति) है। बाकी तिर्यञ्च संज्ञी मनुष्य में तीनों अज्ञान।

१७ योग द्वार विषय

योग १५ हैं। चार मन के—१ सत्य मनोयोग २ असत्य मनोयोग ३ मिश्र मनोयोग ४ व्यवहार मनोयोग। चार वचन के—५ सत्य वचनयोग ६ असत्य वचनयोग ७ मिश्र वचनयोग ८ व्यवहार वचनयोग। सात काया के योग—९ औदारिक १० औदारिक का मिश्र ११ वैक्रिय १२ वैक्रिय का मिश्र १३ आहारिक १४ आहारिक का मिश्र १५ कार्मण योग। नारकी और देवताओं में ११ योग होते हैं। जैसे कि—४ मन के ४ वचन के ये आठ ९ वैक्रिय १० वैक्रिय का मिश्र ११ और कार्मण योग। पृथ्वी पानी आग वनस्पति और असंज्ञी मनुष्यों में तीन योग होते हैं। जैसे कि—१ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण योग। वायु काय में ५ योग होते हैं। जैसे कि १ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रिय का मिश्र ५ कार्मण योग। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ४ योग होते हैं। १ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण ४ व्यवहार। संज्ञी तिर्यञ्च और मनुष्यों में १३ योग होते हैं। जैसे कि—४ मन के ४ वचन के ये आठ ९ औदारिक, औदारिक का मिश्र १० वैक्रिय ११ वैक्रिय का मिश्र १२ कार्मण योग १३। किन्तु संज्ञी मनुष्य में १५ ही योग होते हैं।

१८ उपयोग द्वार विषय

उपयोग १२ हैं। जैसे कि– पांच ज्ञान, तीन अज्ञान चार दर्शन। एवं १२। नारकी, भवनपति वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक १२व देवलोक पर्यन्त ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि) तीन अज्ञान, तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु, अवधि) एवं ९। पांच अनुत्तर विमानों में ६ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत अवधि) तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु अवधि) एवं ६। पांच स्थावर-असंज्ञी मनुष्य, पर्याप्त, अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, पर्याप्त इनमें ३ उपयोग होते हैं। जैसे कि–१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ अचक्षुदर्शन। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्याप्त में ५ उपयोग होते हैं। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मतिअज्ञान ४ श्रुतअज्ञान ५ अचक्षुदर्शन। एवं ५। चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पर्याप्त में ४ उपयोग होते हैं। जैसे कि–१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ चक्षुदर्शन ४ अचक्षुदर्शन एवं ४। मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च। पंचेन्द्रिय में ६ उपयोग होते हैं। जैसे कि–१ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ मति अज्ञान ४ श्रुत अज्ञान ५ चक्षुदर्शन ६ अचक्षुदर्शन। संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि)। एवं ९। संज्ञी मनुष्य में १२ उपयोग होते हैं।

१८ उपयोग द्वार विषय

उपयोग १२ हैं। जैसे कि– पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, चार दर्शन। एवं १२। नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक १२वें देवलोक पर्यन्त ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि) तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि) एवं ९। चार अनुत्तर विमानों में ६ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत अवधि) तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु अवधि) एवं ६। पांच स्थावर- असंज्ञी मनुष्य, पर्याप्त, अपर्याप्त द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय पर्याप्त इनमें ३ उपयोग होते हैं। जैसे कि–१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ अचक्षुदर्शन। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्याप्त में ५ उपयोग होते हैं। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मतिअज्ञान ४ श्रुतअज्ञान ५ अचक्षुदर्शन। एवं ५। चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पर्याप्त में ४ उपयोग होते हैं। जैसे कि–१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ चक्षुदर्शन ४ अचक्षुदर्शन एवं ४। मनुष्य पर्याप्त, अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च। पंचेन्द्रिय में ६ उपयोग होते हैं। जैसे कि–१ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ मति अज्ञान ४ श्रुत अज्ञान ५ चक्षुदर्शन ६ अचक्षुदर्शन। संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु अवधि)। एवं ९। संज्ञी मनुष्य में १२ उपयोग होते हैं।

मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जीव पूर्वोक्त १० दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। संज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जीव २४ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। असंज्ञी मनुष्य में जीव ८ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। जैसे कि—पृथ्वी, पानी, वनस्पति, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। संज्ञी मनुष्य में जीव तेउ, वायु काय वर्ज के शेष २२ दण्डकों से आ उत्पन्न होता है।

२१ आयु द्वार विषय

पहले नरक के नारकियों की आयु जघन्य १० हजार वर्ष की, उत्कृष्ट स्थिति एक सागर की। इसके प्रस्तर (पाथड़े) १३ हैं। पहले प्रस्तर की जघन्य १० हजार की उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की, दूसरे प्रस्तर की जघन्य ९० हजार वर्ष की उत्कृष्ट स्थिति ९० लाख वर्ष की तीसरे प्रस्तर की जघन्य १० लाख की उत्कृष्ट स्थिति क्रोड़ पूर्व की है। इसके आगे १० प्रस्तर और हैं। किन्तु एक सागर के दस भाग करके हर प्रस्तर एक २ भाग बढ़ा लेना चाहिए। जैसे कि—चौथे प्रस्तर की जघन्य स्थिति क्रोड़ पूर्व की उत्कृष्ट दस भाग में एक भाग की है।

पांचवें प्रस्तर की जघन्य एक भाग की	उत्कृष्ट २	भाग की
छठे ,,	२	३
सातवें	३ ,	४ ,

भाग, उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम ५०० वर्ष की। ग्रह विमानवासी देवों की स्थिति—जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्ट एक पल्योपम की। उनकी देवियों का जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्ट अर्ध पल्योपम की। नक्षत्र विमानवासी देवों की स्थिति—जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्ट अर्ध पल्योपम की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम से कुछ अधिक। तारा विमानवासी देवों की स्थिति—जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चतुर्थ भाग की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आठवें भाग से कुछ अधिक।

वैमानिक देवों की स्थिति

पहले देवलोक के देवों की स्थिति—जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की। अपरिगृहीता देवियों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट ५० पल्योपम की। दूसरे देवलोक के देवों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम से कुछ अधिक। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक। उत्कृष्ट नव पल्योपम से कुछ अधिक। अपरिगृहीता देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक, उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की।

५ भरत, ५ ऐरावत के तीसरे आरे उतरते हुए चौथे आरे के लगते हुए और ५ महाविदेह के मनुष्यों की आयु जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट करोड़ पूर्व की।

५ भरत, ५ ऐरावत के चतुर्थ आरे के उतरते हुए पांचवें आरे के लगते हुए मनुष्यों की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट १२ वर्ष की।

पांचवें आरे उतरते हुए छठे आरे के लगते हुए ५ भरत, ५ ऐरावत के मनुष्यों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट १० वर्ष की छठे आरे उतरते हुए १६ वर्ष की। इसी प्रकार उत्सर्पिणी काल की स्थिति जाननी चाहिये। ५६ अन्तर्द्वीपों के युगलिये मनुष्यों की जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग से कुछ न्यून उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण।

तीर्थङ्करों की स्थिति विषय

१	श्री ऋषभदेव भगवान की	८४ लक्ष पूर्व की
२	श्री अजितनाथ "	७२ "
३	श्री सम्भवनाथ "	६०
४	" अभिनन्दन	५०
५	सुमतिनाथ	४० "
६	" पद्मप्रभु	३० "
७	सुपार्श्वनाथ	२०
८	[illegible]	[illegible]

दृम्मास ह व

		हनार वप की
६	कुथुनाथ	,
७	अरनाथ	
८	सम्भूम	३
९	महापद्म	, ,
१०	हरिपण	
११	नयनाग	३ ० वप की
१२	ब्रह्मदत्त	

वासुदेवों का स्थिति विषय

		८४ लक्ष वप की
१	त्रिपृष्ठ वासुदेव की	७
२	द्विपृष्ठ	६० ,
३	सभव	३०
४	पुरुषोत्तम	१० ,
५	पुरुषसिंह ,	६ हनार वप की
६	पुडरीक ,,	५६ ,
७	दत्त	१ ,,
८	लक्ष्मण	१ ,,
९	कृष्ण	

बलदेवों की स्थिति विषय

१	अचल बलदेव की	८५ लक्ष वप की
२	विजय ,, ,	७५ ,,
३	भद्र ,, ,	६५ ,,
४	सुप्रभ ,, ,,	५५ ,,

२३ च्यवन द्वार

जिस प्रकार उत्पान द्वार का वर्णन किया गया है उसी प्रकार च्यवन द्वार का भी स्वरूप जानना चाहिये।

२४ गतागति द्वार विषय

पहले नरक की २५ आगति–१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च ५ असज्ञी तिर्यञ्च। एवं २५ [२० की गति कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च] दूसरे नरक की २० आगति–१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च २० की २० गति १५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च। तीसरे नरक की २० आगति और गति २० की है। किन्तु एक भुजपुर टल गया। चौथे नरक की १९ की आगति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। पाचवे नरक की १७ की आगति (स्थलचर टल गया) गति २० की। छटे नरक की १६ की आगति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। सातवें नरक की १६ की आगति १५ कर्मभूमि के मनुष्य एक जलचर पुरुष–स्त्री नहीं जाति। गति ५ सज्ञी तिर्यञ्च की।

भवनपति वाणव्यन्तर की आगति १११ की ५६ अन्तर द्वीपों के युगलिये १५ कर्मभूमिय मनुष्य ३० अकर्मभूमिय मनुष्य, ५ सज्ञी तिर्यञ्च ५ असज्ञी तिर्यञ्च एवं सब १११।

गति २३ की १५ कर्मभूमिये मनुष्य, ५ सज्ञी तिर्यञ्च, १ पृथ्वी २ पानी ३ वनस्पति एवं २३। ज्योतिषी तथा

प्रकार के देवता ७ नरक, ८३ प्रकार क युगलिय १७१ का थोकडा एव सव ३६३ हुए।

गति २५८ की–९९ प्रकार के देवता ६ नरक १५ कम भूमिये मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च यह सब १२५ बोल हुए।

१२ अपर्याप्त और १ ५ पर्याप्त एव २५० हुए।

तीनों विकलेन्द्रियों रा अपर्याप्त ५ असज्ञी तिर्यञ्च का अपर्याप्त एव ८ यह सब २५८ हुए।

मिथ्यादृष्टि की—आगति २८६ की ९४ प्रकार के देवता ५ अनुत्तर विमानों क देवता टल गए। ७ नरक ८६ प्रकार क युगलिय।

५ हैमवय ५ हरणवय ५ हरिवास ५ रम्यकवास ५ देव कुरु ५ उत्तरकुरु ५६ अन्तरद्वीपा क युगलिय एव ८६। १७९ का थोकडा एव सब ३६६ हुए।

गति ५३ की–नीचे क ५६३ भेदों में से ५ अनुत्तर विमान टल गए। ५ पर्याप्त ५ अपर्याप्त एव १० टले। शेष ५५३ रहे। इतने स्थानों में मिथ्यादृष्टि काल करके जाता है। प्रतिवासुदेव की आगति २७१ की, १७१ का थोकड़ा जैसे कि–९४ प्रकार के देवता ६ नरक। गति अधोलोक की, पुरुषवेद की आगति ३७१ की, ९९ प्रकार के देवता ७ नरक, ८६ प्रकार के युगलिये १७९ का थोकड़ा। गति ५६३ की, स्त्री वेद की आगति ३७१ की ९९ प्रकार के

२६ योग द्वार विषय

योग तीन हैं—१ मन २ वचन ३ काय। नारकीय और देवताओं में ३ योग होते हैं। परन्तु विशेष इतना ही है कि इनमें मन और वचन के योग एक ही समय उत्पन्न होते हैं।

५ स्थावरों में एक ही काय का योग होता है और तीनों विकलेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में २ योग [१ वचन २ काय] होते हैं।

असंज्ञी मनुष्य में एक काय का ही योग होता है किन्तु संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्यों में तीनों योग ही होते हैं।

इति षट्‌विंशति द्वार समाप्त।

१ नाम द्वार

सुधर्म यावत् सर्वार्थसिद्ध पर्यन्त २६ देवलोकों के नाम।

२ सस्थान द्वार

१, २, ३, ४, ९, १० ११ १२ अर्ध चन्द्रमा के सस्थान। ५, ६ ७ ८ नव नवग्रैवेयक सर्वार्थसिद्ध यह पूर्णमासी के चन्द्रमा जैसा सस्थान। चार अनुत्तर विमान सिंघाड़े जैसा सस्थान।

३ पटतल द्वार

पहले दूसरे देवलोक में	१३	पत्तल हैं।
तीसरे चौथे ,,	१२	,,
पाचवें ,,	६	,,
छट्ठे	५	,,
सातवें से बारहवें ,,	तक चार चार	
नव नवग्रैवेयक में	९	पत्तल हैं।
पाच अनुत्तर विमानों में	१	,,

४ विमान द्वार

पहले देवलोक में	३२	लाख विमान हैं।
दूसरे ,,	२८	,,
तीसरे ,,	१२	,,
चौथे ,,	८	,,
पाचवें ,,	४	,,

तामरी	त्रिक में	३९	,,
पाच अनुत्तर विमानों म		५ पक्ति वध ।	

६ सख्यातासख्याता द्वार

सब विमानों को ५ भाग म बाटा गया है जिसम ४ भाग तो असख्यात योजनों क विमान असख्याते दवता रहते हैं। एक भाग म सख्यात योजनों के विमान सख्यात दवता रहत हैं।

७ राजु द्वार

सुमेरु गिरि क पास समभूमि स ७९० योजन ऊपर तारा मण्डल है। तारा मण्डल से १० योजन ऊपर सूर्य विमान है। सूर्य विमान से ८० योजन ऊपर चन्द्रमा का विमान है। चन्द्रमा के विमान से ४ योजन ऊपर २८ नक्षत्रों के विमान हैं। नक्षत्रों स ४ योजन ऊपर बुद्ध का विमान है। बुद्ध से ३ योजन ऊपर शुक्र का विमान है। शुक्र से ३ योजन ऊपर बृहस्पति का विमान है।

बृहस्पति से	,	मगल	,,
मगल से	,	शनैश्चर	, ,,

समभूमि से ऊपर १½ (डेढ़) राजु पहला दूसरा देव लोक है।

उस	,,	१	, तीसरा चौथा	,, ,,
	,,	½ (पौना)	पाचवा छठा	,,
,,	,,	½ (पाव)	सातवा आठवा	,, ,,
,,	,	१	, नववा, दसवा ग्यारहवा, बारहवा	

उससे ऊपर ... ... विमानों का ... है

... ... है

... सिद्ध ... ... मुक्त

हुआ है [...]

राजु का प्रमाण

राजु का प्रमाण— ... ...
दूसरे देवलोक से ... ...
लोहे का गोला बनाया जाय । उस गोले को ... ...
जावे । ... मास ... दिन ... ...
इतने काल में जितनी दूर जाय उसको एक राजु का
प्रमाण कहते हैं । अथवा असंख्यात योजनों का एक राजु है ।

नोट—ज्योतिषी चक्र ११० योजन में है ।

८ आधार द्वार

पहला दूसरा देवलोक घनोदधि के आधार से है ।
३, ४, ५ , घनवाय
६, ७, ८ ,, दोनों
९वें से २६वें तक जितने विमान हैं, सब में हल्के भार परमाणुओं की परस्पर की कशिश से आकाश पर ही स्थित हैं।

९ महल द्वार

पहले दूसरे देवलोक में	५००	योजन ऊँचे महल	हैं।
३, ४ ,,	६००	,,	,,
५, ६ ,,	७००	,,	,,

/ /

१० ११ १२ ६

९ नवग्रैवयक म १ हजार योजन ऊचा। अनुत्तर विमानो
११०० ग्यारह सौ ऊच महल है।

१० अगनाई द्वार

पहले दूसरे देवलोक मे	[illegible]	योजन की अगनाई।
३ ४	२६००	
५ ६	[illegible]	„
७, ८	[illegible]४०	„
९ १० ११ १२	[illegible]	„
नव नवग्रैवयक	[illegible]००	„
५ अनुत्तर विमाना	२१०	„

११ वर्ण द्वार

पहले दूसरे देवलोक म पाचों वर्णो के विमान नवाहरात के होते हैं।

३, ४	४	[काला नही]
५, ६ „	३ „	[नीला नही]
७ ८ „	२ „	[लाल नही]

९ से लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक एक ही वर्ण देवन।

१२ चिह्न द्वार

मुकुटों के चिह्न।

पहले देवलोक के इन्द्र के मुर्गे का चिह्न।

दूसरे „ „ भैंसे „ „

आठवें ,, , १२ ०० ।
नौवें दसवें देवलोक के इन्द्र के ८ ०० आत्मरक्षक देवता
ग्यारहवें बारहवें ,, ४०००० , ,

१५ लोकपाल द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ४ लोकपाल।

दूसरे से लेकर आठवें तक चार चार ही लोकपाल हैं।

९व १०वें के ४ लोकपाल हैं

११वें बारहवें ,, ४

१६ तेत्तीस द्वार

एक एक इन्द्र के ३३-३३ देवता माता पिता तुल्य गुरु स्थान हैं। इन पर इन्द्र का हुक्म नहीं।

१७ अनिका द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ७ अनिका।

[हाथी, घोड़, रथ, पैदल, नाटक गन्धर्व वृषभ की एव सात २ अनिका]

पहले देवलोक के इन्द्र के १ करोड़ ६ लाख ६८ हजार।

[illegible]

[illegible] परिषद् द्वार

[illegible] परिषद् ।

[illegible] की परिषद् [illegible] की परिषद् [illegible] की परिषद् ।

[illegible] की [illegible] की [illegible] की परिषद्

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पांचवें	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सातवें	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आठवें	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्यारहवें बारहवें १२५ 	२७ 	५०

१९ अग्रमहिषी द्वार

पहले इन्द्र की ८ अग्रमहिषियां।

एक अग्रमहिषी का १६ हजार देवियों का परिवार है। तो कुल परिवार आठों का १२८००० है।

यह एक देवी वैक्रिय करे तो १६००० देवी हुई। इस प्रकार इन्द्र का सब परिवार ... ४८ ००००० देवियों का है।

दूसरे इन्द्र का भी ऐसे समझ लेना।

२० परिचारणा द्वार

पहिले दूसरे देवलोक में मनुष्यवत् सहवास।

तीसरे चौथे	स्पर्श मात्र
पांचवें छठे	रूप अवलोकन से तृप्ति।
७वें ८वें	वचन मात्र ,,
९वें १०वें ११वें १२वें	मन

२१ विमाननाम द्वार

पहिले देवलोक में पालक नामक विमान।

दूसरे	पुष्पक
तीसरे	सौमनस
चौथे	नन्दिवर्धन
पांचवें	श्रीवत्स

उर्ध्व	ग्राम
मानव	चिन्ह
आनव ९ २०३	मुनिमन
११व १०३	मतनाम

२२ नागन आगन अथात् नान आन रा द्वार

पहिली नरक तक चारा प्रकार क देवता ना सक्त हैं।
दूसरी (ज्योतिषी टले)
तीमरी (वाण-व्यन्तर टले)
चौथी स सातवा नरक वल वैमानिक देवता ना सकते हैं।

२३ ज्ञान द्वार

१६ वाणव्यन्तर ९ नवनिकाय ज्योतिषी यह ऊपर का २५ यानन और नीच ५ यानन तक देख सक्त हैं और तिच्छा सख्यात द्वीप समुद्र देख सक्त है। भवनपतियों के चमरेन्द्र, बलेन्द्र ऊपर को पहल दूसरे देवलोक तक देखते हैं। नीचे पहल नरक का चरमान्त तिच्छा असख्याते द्वीप समुद्र देख सकता है। पहल दूसर देवलोक वाले देवते ऊपर अपन विमान की ध्वजा पताका तक। नीचे पहली नरक के चरमान्त तक तिच्छा असख्यात द्वीप समुद्र तक देख सक्ते हैं। तीमरे चौथे देवलोक क देवत ऊपर ध्वजा पताका तक, नीचे दूसरी नरक का चरमान्त, तिच्छा असख्याते द्वीप समुद्र तक देख सकते हैं।

६वें ६ठे वाला ऊपर अपनी ध्वजा पताका तक नीचे तीसरी
नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र तक।

७वें ८वें ... चौथी
नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र तक

९वें १०वें ११वें १२वें ... पांचवीं

नव ग्रैवेयक वाले में पहले दूसरे त्रिक वाले ऊपर ध्वजापताका तक नीचे छठी नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र तक।

नव ग्रैवेयक में तीसरी त्रिकवाले ऊपर ध्वजापताका तक नीचे सातवीं नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र तक।

पांच अनुत्तर विमानों के देव कुछ कम सम्पूर्ण लोक देख सकते हैं।

५४ ऋद्धि द्वार

[illegible]

[illegible] ...

[illegible] ...

[illegible] ...

[illegible] [illegible]

[illegible] ...

चौथे	[illegible]	[कुछ अधिक]
पाचवें	[illegible]	
छठे	[illegible]	[कुछ अधिक]
सातवें	१[illegible]	
८वें	[illegible]	[कुछ अधिक]
९वें १०वें	[illegible]	
११वें १२वें	३[illegible]	[कुछ अधिक]

वैक्रिय की शक्ति से भर देने की इतनी शक्ति होती है।

२५ पुण्य द्वार

वाणव्यन्तर १०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं। ज्योतिषी २०० वर्ष पार उतना भोगते हैं। इनका इन्द्र ३०० वर्ष पीछे उतना पुण्य भोगता है।

भवनपति ४०० वर्ष में इतना पुण्य भोगते हैं। उनके इन्द्र ५०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं।

पहले, दूसरे देवलोक वाले	१००० वर्ष	,,	,,	,,
तीसरे, चौथे	२००	,,	,,	,,
पाचवें, छठे	३०००	,,	,,	,,
७वें, ८वें	४०००	,,	,,	,,
९वें, १०वें, ११वें, १२वें,	५०००	,,	,,	,,
नवग्रैवेयकमें पहली त्रिकवाले	१०००००	,,	,,	,,
,, दूसरी	२०००००	,,	,,	,,

, तीसरी ३००००० ,, , ,,
४ अनुत्तर विमानों वाले ४००००० ,, ,, ,,
सर्वार्थसिद्ध वाले ५००००० ,, ,, ,

२६ परिगृहीत अपरिगृहीत द्वार

पहले देवलोक वाले देवता जघन्य एक पल्य की आयुवाली देवी भोगते हैं।

उत्कृष्ट ७ पल्य की देवी
दूसरे , , एक पल्यसे अधिक ,,
उत्कृष्ट ९ पल्य की देवी
तीसरे , , ७ ,,
उत्कृष्ट १० पल्य की देवी
चौथे १० , ,
उत्कृष्ट १५ पल्य की देवी
पांचवें , १५ , ,
उत्कृष्ट २० पल्य की देवी
छठे २० ,
उत्कृष्ट २५ पल्य की देवी ,
सातवें वाले जघन्य २५ पल्य की। उत्कृष्ट ३० पल्य की।
आठवें ३० ३५ ,
नौवें , ३५ ४०
दसवें , ४० , ४५ ,

दूसरी पृथ्वी का १३२०० योजन मोटा दल है। उसमें एक हजार नीचे एक हजार ऊपर छोडकर मध्य १३०००० योजन की पोलाइ में ११ पाथड़ (मंजल) और २५ लाख नरक के वास हैं।

तीसरी पृथ्वी का १२८००० योजन मोटा दल है। जिसमें एक हजार योजन नीचे एक हजार ऊपर छोडकर मध्य १२६००० योजन की पोलाइ में ९ पाथड और १५ लाख नरक के वास हैं।

चौथी पृथ्वी का १२०००० योजन मोटा दल है। एक हजार योजन नीचे, एक हजार ऊपर छोडकर मध्य ११८००० योजन की पोलाइ में ७ पाथड और १० लाख नरक के वास हैं।

पांचवी पृथ्वी का ११८००० योजन मोटा दल है। एक हजार ऊपर एक हजार नीचे छोडकर मध्य ११६००० योजन की पोलाइ में ५ पाथड़ और ३ लाख नरक के वास हैं।

एक पाथड़ा तीन २ हजार योजन का मोटा है।

नोट—पहली पृथ्वी के ३ भाग हैं।

१ खर (कठिन) भाग। १६००० योजन मोटा।

२ पङ्क भाग। ८४००० ,, ,,

३ अपबहुल (जलबहुल) भाग। ८०००० ,,

एव सब १८०००० योजन हुए।

पायड़ा का अन्तर

ली नरक के १३ पायड़ और १२ अन्तर। एक
अन्तर ११५८३ योजन एक भाग का है।

र्सी के ११ पायड़ १० अन्तर। एक एक का ९७००
योजन का अन्तर।

तीसरी ,, ९ ,, ८ ,, ,, ,, १२३७५ ,, ,,।
चौथी ,, ७ ,, ६ ,, ,, ,, १६१६६ ,, ,,।
पाचवीं ,, ५ ,, ४ ,, ,, ,, २५२५० ,, ,,।
छट्ठी ,, ३ ,, २ ,, ,, ५२५०० ,, ,,।
सातवीं ,, १ अन्तर नहीं।

श्रेणी बन्ध

पहली नरक म २९९५५६७ पुष्पावकीर्ण वास।
और ४४३३ पंक्ति बन्ध।

दूसरी ,, ,, २४९७३०५ ,, ,,
और २६९५ पंक्ति बन्ध।

तीसरी ,, ,, १४९८५१५ ,,
और १४८५ पंक्ति बन्ध।

चौथी ,, ,, ९९९२९३ ,, ,,
और ७०७ पंक्ति बन्ध।

पाचवीं ,, ,, २९९७३५ ,, ,,
और २६५ पंक्ति बन्ध।

जैन धर्म के मुख्य नियम

१ लोक अनादि, अनन्त, अकृत्रिम है। चेतन अचेतन आदि इन छः द्रव्यों से भरा हुआ है।

जीव द्रव्य अनन्तानन्त भिन्न हैं (१) अजीव द्रव्य रूपी तथा अरूपी रूपी द्रव्य अनन्त (२) बाकी चार अरूपी—धर्मास्तिकाय (३) अधर्मास्तिकाय (४) आकाशास्तिकाय (५) काल द्रव्य (६) क्रम से चलन, स्थिर अवकाश और परिवर्तन स्वभाव हैं। इन गुणों से युक्त है। विशेष विवरण नवतत्व में देखें।

२ परमात्मा सच्चिदानन्द अनन्तज्ञानी अरूपी त्रिजगत् ज्ञाता सर्वव्यापक है, अयोनि, अजर अमर, निराकार निष्कलंक निर्लिप्त निरुपाधिक निर्मम, सर्वज्ञ सर्वदर्शी अनन्त शक्तिमान नित्य अक्षर, अरज अनन्त, अक्षय, अव्यय, सिद्ध बुद्ध मुक्त इत्यादि गुणों के धारक परमात्मपद को अर्हद् मानते हैं।

३ संसारी जीव—अनादि पुद्गलमय शरीर रूप कर्मों से शरीर में प्रवेश करता हुआ अनादि से भिन्न २ शरीर, कर्मों के कारण अशुद्ध और अशान्त हैं। पांच इन्द्रियों के विषय हैं। हर एक संसारी जीव स्वभाव से अपने अशुद्ध कर्मों द्वारा बद्ध बन्धन है। फिर कर्मों के बल से इन्द्रियों में

ईर्या समिति [मार्ग शोध कर चलना] १ भाषा समिति [विचार कर बोलना] २ एषणा स० [निर्दोष आहार पानी लेना] ३ आयाणभण्डमत्त निक्खेवणा स० [वस्त्र वस्तु के रखने उठाने में संयम] ४ परिट्ठावणिया स० [गिराने में संयम यत्न] ५ मन को असंयम से रोक कर संयम में लगाना ६ ७ वचन को असंयम से रोक कर संयम में लगाना ८ काया को असंयम से रोक कर संयम में लगाना एवं १३ शुभ चारित्र के धारन वाले को गुरु मानते हैं ।

६ धर्म—मन वचन काया से स्वयं किसी प्राणी को कष्ट नहीं देना । अन्य से दिलाना नहीं । किसी प्राणी को कष्ट देनेवाले की अनुमोदना नहीं करनी । इस पूर्ण अहिंसा व्रत को तो महात्मा ही पाल सकते हैं । और सर्वसाधारण गृहस्थ के लिए यथाशक्ति धर्म पालन के अनेक दर्जे हैं । जिन में चक्रवर्ती से लेकर रङ्क पर्यन्त सब ही नियत अंश में धर्म पाल सकते हैं । उतने अंश को अहिंसा धारी को हिंसा कहते हैं ।

७ शास्त्र—[सिद्धान्त] देव, अरिहन्त [आप्त], सर्वज्ञ द्वारा कथित शास्त्र को प्रामाणिक मानते हैं । जिसके कथन में पुनर्दोष, अविचार आदि दोष न हों । परस्पर विरोध न हो । प्राणिमात्र को हितकारक हो । किसी को हित और किसी को अहितकारी न हो । सब से समविभाग का सूचक

कुगुरु, कुदेव, कुधर्म, कुशास्त्र, कुरूढ़ि आदि से हटा कर सुगुरु, सुदेव, सुधर्म सुशास्त्र सम्यक्त्व, तप नियम संयम, स्वाध्याय, शुभध्यान सत्य सन्तोष आदि शुभ गुणों में प्रवृत्ति कराना। प्राणिमात्र से मैत्री भाव गुण ग्रहण, करुणा, मध्यस्थ भाव, अन्याय को छोड़ना न्याय में प्रवृत्त होना आदि गुणों में लगाना। और साधु साध्वी श्रावक, श्राविका, चार तीर्थ रूपी संघ का परस्पर मेल करा कर धर्म प्रीति और प्रेम में वृद्धि कराना। कुमार्ग त्यागना सुमार्ग में प्रवृत्त होना सर्वज्ञ प्रणीत सिद्धान्त को प्राणिमात्र के कानों तक पहुँचाना। दान शील तप भावना आदि में प्रवृत्त होने को धर्म चर्चा कहते हैं जिसमें सात कुव्यसनों का त्यागना भी है।

९. परोपकार

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना भेद जो करते हैं।
ऐसे परोपकारी जग के दुःख समूह को हरते हैं॥

अपने स्वार्थ को त्याग कर दुखियों के हित साधन में लग जाने का नाम परोपकार है। स्वयं कष्ट, भार आपत्ति सह असहायों की रक्षा निर्बलों का आश्रय दुःख भय से [illegible] दुखी को निर्भय करना [illegible] अथवा [illegible] के लिए [illegible] का [illegible] करना। इसलिए मनुष्य समाज में [illegible] है। तात्पर्य तन मन धन से सेवा करना। जिन वस्तुओं से मनुष्य का

५ नाम — अमूर्तत्व रूप रस गंध स्पर्शादि रहित निरंजन निराकारपना।

६ गोत्र — अगुरु लघुत्व उच्चता नीचता रहित हलके भारीपन का अभाव।

७ वेदनीय — अनन्त अव्याबाध गुण।

८ आयुष्य — अक्षय स्थिति।

इन आठ गुणों के प्रगट होने से कर्म रूप से रहित निर्मल आत्मा अक्षय अनन्त सुख में लीन होकर सिद्धात्म स्वरूप होकर आत्मा में ज्ञान सत्ता का अनन्त गुण में ठहर हो जाती है। फिर जन्म मरण रूप बन्धनों में कभी नहीं आता।

यथा—दग्धे बीजे यथात्यन्तं प्रादुर्भवति नांकुरः।
कर्मबीजे तथा दग्धे न रोहति भवांकुरः॥

गुणस्थान

गुणस्थान १४ हैं [illegible] (आत्मा) [illegible] है। अर्थात् आत्मा के गुणों का [illegible] है।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—[illegible] ८४ [illegible] है।

२ सास्वादन गुणस्थान—[illegible]

एक भव उत्कृष्ट ७ तथा ८ भव में मोक्ष प्राप्त करता है।

७ अप्रमादि गु०—मद १ विषय २ कषाय ३ विकथा ४ निद्रा ५ इन पाचों प्रमादों को छोड़ता है। जघन्य उसी भव म मध्यम ३ भव उत्कृष्ट ७ तथा ८ भव में मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

८ नियट्ट बादर गु०—अपूर्व करण, शुक्लध्यान, आवे। यहा से श्रेणी करता है। उपशम (पडिवाइ) क्षपक (अपड़िवाइ)।

९ अनियट्ट बादर गु०—इक्कीस प्रकृतिय उपसमाता है। १५ पहिली हास १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगन्छा ६ एवं २१।

१० सूक्ष्म सम्पराय गु०—२७ प्रकृति उपशमाता है। २१ पहली, स्त्रीवेद १ पुरुष वेद २ नपुसक वेद ३ संज्वलन का क्रोध ४ मान ५ माया ६ एवं २७।

११ उपशान्त मोहनीय गु०—यहा २८ प्रकृतिया उपसमाता है। २७ पहिली एक संज्वलन का लोभ एवं २८। यहा पर काल कर तो अनुत्तर विमान म जावे। यदि संज्वलन का लोभ उदय हो जावे तो पीछे गिर कर दसवें नववें या पहले गुणस्थान में आ जावे।

क्षपक श्रेणी २१ प्रकृतिया क्षय करे। तब जीव नववें अनियट्ट बादर गुणस्थान में आता है। २७ क्षय कर तब दसवें सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान म आता है।

२ गु० की स्थिति—जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ आव लिका ७ समय की।

३ गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

४ गु० की स्थिति—जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट साधिक ६६ सागर की। तीन भव १२ देवलोक के २२—२२ सागर के अथवा ३३—३ सागर के २ भव अनुत्तर विमानों के। मनुष्य भव में अधिक।

५ गु० की स्थिति—५ ६ १३ गुणस्थान की स्थिति जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट देशऊणा पूर्व क्रोड़ की।

७ वें से ११ वें गुणस्थान तक की स्थिति—जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

१२ वें गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

१४ गु० की स्थिति—५ लघु अक्षर उच्चारण काल की।

क्रिया

१ ३ गु० में २४ क्रिया इरियावहि नहीं।
२ ४ ,, २३ इरिया मिथ्या नहीं।
५ २२ ,, ,, अव्रत नहीं।
६ ,, ,, २ आरंभिया मायावत्तिया।
७ से १० तक १ क्रिया मायावत्तिया।
११ १२ १३ में १ क्रिया इरियावहि।
१४ वें गुणस्थान में क्रिया नहीं।

२ गु० की स्थिति—जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ आव लिका ७ समय की।

३ गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की।

४ गु० की स्थिति—जघन्य अन्तर्मुहूर्त वा उत्कृष्ट साधिक ६६ सागर की। तीन भव १२ देवलोक के २२—२२ सागर के अथवा ३३—३३ सागर के २ भव अनुत्तर विमानों के। मनुष्य भव में अधिक।

५ गु० की स्थिति—५, ६, ७ गुणस्थान की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट देशऊणा पूर्व क्रोड़ की।

७ वें से ११वें गुणस्थान तक की स्थिति—जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की।

१० वें गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की।

१४ गु० की स्थिति—५ लघु अक्षर उच्चारण काल की।

क्रिया

१ गु० में २४ क्रिया इरियावहि नहीं।

४ " २३ " इरिया मिथ्या नहीं।

" २२ " " अव्रति नहीं।

" २ आरम्भिया मायावत्तिया।

७ से १० तक १ क्रिया मायावत्तिया।

११, १२, १३ में १ क्रिया इरियावहि।

१४ वें गुणस्थान में क्रिया नहीं।